RNI-RAJBIL/2009/32418

Vol: 9, Issue : 1, January-June 2017

Samvahini

Half Yearly Newsletter | Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

www.jvbi.ac.in

जैन विश्वभारती संस्थान की ओर से विनोद कुमार कक्कड़, जैन विश्वभारती संस्थान द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित तथा तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर में मुद्रित एवं जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान) में प्रकाशित। सम्पादक-समणी अमल प्रज्ञा

A graded by NAAC

NAAC Re-accredited 'A' Grade Certificate

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद

NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

An Autonomous Institution of the University Grants Commission

Certificate of Accreditation

The Executive Committee of the National Assessment and Accreditation Council on the recommendation of the duly appointed Peer Team is pleased to declare the Jain Vishva Bharati Institute (Deemed to be University u/s 3 of the UGC Act, 1956) Ladnun, Dist. Nagaur, Rajasthan as Accredited With CGPA of 3.11 on the four point scale at A grade valid up to July 07, 2018

Date : July 08, 2013

Director

EC/64/RAR/25

आचार्य महाश्रमण

अनुशास्ता

जैन विश्व भारती संस्थान

अनुशास्ता उवाच

ज्ञान सम्पन्न बनें

प्रश्न किया गया - नाणसंपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? भंते ! ज्ञान-संपन्नता (श्रुतज्ञान की संपन्नता) से जीव क्या प्राप्त करता है ? उत्तर दिया गया - नाणसंपन्नयाए णं जीव सव्वभावाहिगमं जणयइ। नाणसंपन्ने णं जीवे चाउरंते संसारकंतारे न विणस्सइ।

जहा सूई ससुत्ता, पडिया वि न विणस्सइ।

तहा जीवे ससुत्ते, संसारे न विणस्सइ।।

नाणविणयतवचरित्तजोगे संपाउणइ, ससमय-परसमयसंघायणिज्जे भवइ।

ज्ञान संपन्नता से वह सब पदार्थों को जान लेता है। ज्ञान-संपन्न जीव चार गति-रूप चार अन्तों वाली संसार अटवी में विनष्ट नहीं होता।

जिस प्रकार ससूत्र (धागे में पिरोई हुई) सूई गिरने पर भी गुम नहीं होती, उसी प्रकार ससूत्र (श्रुत सहित) जीव संसार में रहने पर भी विनष्ट नहीं होता।

(ज्ञान-संपन्न) अवधि आदि विशिष्ट ज्ञान, विनय, तप और चारित्र के योगों को प्राप्त करता है तथा स्वसमय और परसमय की व्याख्या या तुलना के लिए प्रामाणिक पुरुष माना जाता है।

श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया- **न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।** ज्ञान के समान दुनिया में कोई पवित्र चीज नहीं है। जिसमें श्रद्धा होती है, ज्ञान की रूचि होती है वह व्यक्ति ज्ञान को प्राप्त कर सकता है। ज्ञान को प्राप्त कर आदमी परम शांति को प्राप्त कर लेता है। इसलिए जीवन में ज्ञान की प्राप्ति हो, यह प्रयास करना चाहिए।

शास्त्रकार ने ठीक कहा - ज्ञानं संपन्नता जीवन में आ जाती है तो वह व्यक्ति विनय में आगे बढ़ता है। चारित्र की आराधना साथ लेता है और सब पदार्थों को जानने वाला बन जाता है। इसके साथ-साथ स्वसमय-अपने दर्शन के बारे में और परसमय-दूसरों के दर्शन के बारे में प्रामाणिक व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हो जाता है। इसलिए जीवन में ज्ञान की आराधना करनी चाहिए। आदमी को ज्ञान संपन्न बनने का प्रयास करना चाहिए।

कुलाधिपति नियुक्त

देश की प्रमुख महिला उद्योगपति

सावित्री जिन्दल बनी विश्वविद्यालय की कुलाधिपति

प्रसिद्ध औद्योगिक घराने जिन्दल ग्रुप से सम्बद्ध सावित्री जिन्दल (हिसार) को जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय के कुलाधिपति (चांसलर) पद पर नियुक्त किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने बताया, सावित्री देवी जिन्दल को मातृ संस्था जैन विश्व भारती द्वारा यह नियुक्ति अगले पांच सालों के लिये प्रदान की गई है। इससे पूर्व संस्थान के कुलाधिपति पद पर बसंतराज भंडारी कार्यरत थे। ज्ञात रहे कि सावित्री देवी जिन्दल हरियाणा से विधायक रह चुकी तथा वे जिन्दल स्टील्स एंड पॉवर लिमिटेड की अध्यक्ष है। देश की सबसे अमीर महिला के रूप में उनकी पहचान है तथा जिन्दल को दुनियां की सातवीं सबसे अमीर मां के रूप में भी पहचाना जाता है। उनकी कुलाधिपति के रूप में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में नियुक्ति से हर्ष है।

संस्थान में यू.जी.सी. टीम के दौरे की झलकियाँ

Samvahini

वर्ष-9, अंक-1
जनवरी-जून, 2017
जैन विश्वभारती संस्थान
(अर्द्धवार्षिक समाचार पत्र)

संरक्षक
प्रो. बच्छराज दूगड़
कुलपति

सम्पादक
समणी अमलप्रज्ञा

कम्प्यूटर एण्ड डिजाईन
पवन सैन

प्रकाशक
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ – 341306
नागौर, राजस्थान
दूरभाष : (01581) 226110 226230
फैक्स : (01581) 227472
E-mail : jvbiladnun@gmail.com
Website : www.jvbi.ac.in

सम्पादकीय

अन्तर्राष्ट्रीय पहचान का माद्दा

जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) अपनी अंतर्राष्ट्रीय पहचान का माद्दा रखता है, इस बात को यहां आई यूजीसी की टीम ने भी स्वीकार किया है। यूजीसी की विशेषज्ञ टीम ने तीन दिनों तक विश्वविद्यालय भवनों, परिसर, विभागों, संसाधनों, व्यवस्थाओं आदि को देखा, रिकॉर्ड चैक किये तथा संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों, स्टाफ सदस्यों आदि से बातचीत की। इस टीम ने अपनी जो रिपोर्ट तैयार की, उस 25 पृष्ठीय रिपोर्ट में संस्थान को लोकोपकारी, भारतीय संस्कृति व मूल्यों को अक्षुण्ण रखने वाली भावी जरूरतों को पूरा करने वाला इन्फ्रास्ट्रक्चर, इको-फ्रेंडली, क्लीन एवं हाईजेनिक कैम्पस बताया तथा इसे एक अद्वितीय विश्वविद्यालय की उपमा देते हुये इसके अन्तर्राष्ट्रीय विकास की आवश्यकता बताई। रिपोर्ट में अहिंसा एवं प्राच्य विद्याओं जैसे विषयों को यूजीसी द्वारा सीमाओं में बांधे जाने को गलत ठहराया तथा टीम ने यूजीसी से सिफारिश की है कि इस संस्थान को विशेष अनुमति दी जाये ताकि यह संस्थान पूरे देश व देश से बाहर भी कार्य कर सके। यह रिपोर्ट गत 21 फरवरी को हुई यूजीसी की 521वीं बैठक में स्वीकृत की गई। संस्थान के लिये यह गौरव का विषय है। यूजीसी विशेषज्ञ टीम का दौरा यहां सभी के लिये अपने आप में एक चुनौतीपूर्ण माना जा रहा था, जिसे कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में संस्थान के सभी सदस्यों ने पूरा किया।

संस्थान को विश्वविद्यालय के रूप में कार्य करते हुये 27वां साल चल रहा है। गत 20 मार्च को इसका 27वां स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। यह अवसर विश्वविद्यालय के मौजूदा स्वरूप व प्रगति की एक झांकी के रूप में होता है। इस बार यह विशेषता रही कि इस आयोजन की सम्पूर्ण तैयारी महिला सदस्याओं द्वारा की गई। वर्तमान में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के कुशल नेतृत्व में इस विश्वविद्यालय ने नई व्यवस्थायें, नई परम्परायें, नया इंफ्रास्ट्रक्चर, नये पाठ्यक्रम, नई रणनीति आदि का आगाज देखा है। यही कारण रहा कि यह विश्वविद्यालय हर क्षेत्र में अद्वितीय रहने से पीछे नहीं होता। यूजीसी टीम इसी कारण प्रभावित हो पाई। यूजीसी रिव्यू टीम के अध्यक्ष प्रो. एचसीएस राठौड़ ने ये उद्गार तक व्यक्त किये कि आचार्य तुलसी जैसे संतों ने जहां बुनियाद लगाई हो, वह संस्थान बुलंदी पर तो पहुंचेगा ही। इस विश्वविद्यालय के पीछे तो पूरा समाज खड़ा है। इन महत्वपूर्ण कार्यों के अतिरिक्त संस्थान द्वारा सेमिनार/सम्मेलनों एवं कार्यशालाओं का आयोजन तथा विश्वविद्यालय के पूर्व छात्रों का एल्यूमिनी मीट-2017 का आयोजन भी काफी प्रभावात्मक रहा।

आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ और वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण इस विश्वविद्यालय के अनुशास्ता हैं, तो निश्चित रूप से यह संस्थान प्रगति पथ पर अग्रसर ही रहेगा। यही बात इसे अन्य विश्वविद्यालयों से पृथक् करती है और अन्तर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने में सक्षम बनाती है। फिर इसे कुलपति के रूप में एक श्रेष्ठ व्यक्तित्व, प्रगतिगामी सोच, कुशल प्रबंधक, सुयोग्य अनुशासक प्रो. दूगड़ मिले हैं तो यह संस्थान निश्चित ही प्रगति पथ पर अग्रसर होता रहेगा।

– समणी अमल प्रज्ञा

जहां संतों की लगाई बुनियाद हो, वह संस्थान बुलंदी पर तो पहुंचेगा ही- प्रो. राठौड़

यूजीसी की टीम ने नये कोर्स शुरू करने पर जताई सहमति

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की रिव्यू कमेटी के चैयरमेन प्रो. एचसीएस राठौड ने कहा- जहां संतों के चरण पड़ते हैं, वे स्थान पवित्र हो जाते हैं और जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय की तो स्थापना ही आचार्य तुलसी जैसे संत द्वारा की गई है तो इसे तो बुलंदी पर पहुंचने से कोई नहीं रोक सकता। उन्होंने यहां विश्वविद्यालय के कॉन्फ्रेंस हॉल में विश्वविद्यालय के प्रमुख अधिकारियों के साथ बैठक लेते हुये विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों को यू.जी.सी. द्वारा राज्य की सीमा में बांधे जाने को गलत बताया तथा कहा- ये कोर्सेज तो देश की सीमाओं से बाहर निकलने चाहिये, ये कोर्स अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के हैं। उन्होंने इस बात पर खुशी जताई कि यहां के समस्त विद्यार्थी, शिक्षक एवं अन्य स्टाफ सुविधाओं, वातावरण एवं व्यवस्थाओं से पूरी तरह खुश हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय के इंफ्रास्ट्रक्चर, व्यवस्थायें, शिक्षण कार्य, विद्यार्थी आदि सभी की सराहना करते हुये कहा - आधुनिक तकनीक के साथ इसे जोड़ा जाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय के पीछे पूरा समाज खड़ा है और इसी कारण यह निरन्तर प्रगति कर रहा है। उन्होंने क्षेत्र के खारे पानी की समस्या को देखते हुये इस समस्या से निजात दिलवाने के लिये यूजीसी से पूरे प्रयास करने का आश्वासन दिया तथा नये पाठ्यक्रमों लॉ, एमबीए, एमकॉम, आयुर्वेद, बी.फार्मा, एम. फार्मा आदि को शुरू करने की अनुशंषा की।

पूरी पारदर्शिता मिली

यूजीसी के ज्वाइंट सेक्रेट्री एवं टीम के समन्वयक डा. जितेन्द्र कुमार त्रिपाठी ने भी खारे पानी से निजात दिलाने के लिये आश्वासन दिया तथा विश्वविद्यालय की व्यवस्थाओं की प्रशंसा करते हुये कहा कि यहां कार्य में पूरी पारदर्शिता है। जिन दस्तावेजों और डाटाज को मांगा गया, वे सब उन्हें तत्काल उपलब्ध करवा दिये गये, जो अन्य विश्वविद्यालयों में प्राय: नहीं मिलते।

ये रहे बैठक में उपस्थित

बैठक में यूजीसी रिव्यू कमेटी टीम के अध्यक्ष प्रो. एचसीएस राठौड, टीम के सदस्यों के रूप में यूजीसी के ज्वांइट सेक्रेट्री डॉ. जितेन्द्र कुमार त्रिपाठी, प्रो. अनूप बेनिवाल प्रो. के., बिस्वाल, डा. प्रियदर्शना जैन,, प्रो. भरत कुमार तिवाड़ी, एनसीटीई के प्रतिनिधि अवधेश, आयुष मंत्रालय के अंशुमान शर्मा एवं कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड, कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड, दूरस्थ शिक्षा के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. आरबीएस वर्मा, प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा, शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन, वितााधिकारी आरके जैन, उप रजिस्ट्रार नेपाल चंद गंग, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्रिंसिपल डॉ. जुगल किशोर दाधीच, डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, डॉ. युवराज सिंह खांगारोत, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ दूरस्थ शिक्षा की सहायक निदेशक नुपूर जैन आदि उपस्थित रहे।

विभिन्न विभागों का किया अवलोकन

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की आठ सदस्यीय टीम 19 से 21 जनवरी तक यहां रही। उन्होंने यहां विश्वविद्यालय के विभिन्न शैक्षणिक विभागों की जानकारी प्राप्त की। यूजीसी दल ने विश्वविद्यालय की प्रबंधन समिति एवं सभी विभागाध्यक्षों की बैठक ली, जिसमें टीम के समक्ष विश्वविद्यालय के बारे में पूर्ण विवरण, अध्यापन कार्य, शोध एवं प्रसार गतिविधियां, वित्तीय व्यवस्थाओं आदि के अलावा विश्वविद्यालय की भविष्य की योजनाओं के बारे में प्रस्तुतिकरण प्रो. आरबीएस वर्मा द्वारा किया गया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड ने संस्थान के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डाला। इस बैठक में यूजीसी टीम से सदस्यों के अलावा कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड, रजिस्ट्रार विनोद कुमार कक्कड़, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष रमेश सी बोहरा, पूर्व अध्यक्ष डा. धर्मचंद लूंकड, प्रबंध मण्डल सदस्य प्रो. नलिन शास्त्री, प्रो. जेपीएन मिश्रा, प्रो. जगतराम भट्टाचार्य, समणी नियोजिका समणी ऋजुप्रज्ञा एवं सभी विभागाध्यक्ष मौजूद रहे। इस टीम ने विश्वविद्यालय के प्राच्य भाषा विभाग, जैनविद्या विभाग, शिक्षा विभाग, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग, समाज कार्य विभाग, अंग्रेजी विभाग, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, केन्द्रीय लाईब्रेरी, विभिन्न प्रयोगशालाओं, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं अन्य शैक्षणिक विभागों का दौरा करके उनका निरीक्षण किया तथा सभी विभागों, उनके प्रकाशनों व शोध कार्यों की जानकारी ली तथा विभागीय पुस्तकालयों का अवलोकन किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित

यूजीसी की टीम ने विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी भी ली। उन्होंने इस अवसर पर यहां के विद्यार्थियों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का अवलोकन किया। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष रमेश सी. बोहरा व पूर्व अध्यक्ष डा. धर्मचंद लूंकड ने इस अवसर पर यूजीसी टीम के अध्यक्ष एवं सभी सदस्यों को शॉल ओढा कर एवं प्रतीक चिह्न प्रदान करके सम्मानित किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में रागिनी शर्मा ने गणेश वंदना, रिया व निकिता ने युगल लोकगीत, मानसी एवं समूह ने पंजाबी नृत्य, फिरोज ने एकल लोकनृत्य, सुरक्षा जैन ने एकल लोकगीत, सुभद्रा एवं समूह ने सामूहिक गुजराती नृत्य, पूजा एवं समूह ने महात्मा गांधी पर आधारित माईम, सुमन सीमर एवं समूह ने घूमर नृत्य, मीनू रोडा ने एकल वंदे मातरम एवं समणी वृंद व मुमुक्षु बहिनों ने कपिल शो प्रस्तुत किये तथा जीवन विज्ञान विभाग के विद्यार्थियों द्वारा योगासनों व योग-क्रियाओं का रोचक प्रदर्शन किया।

राष्ट्रीय सेमिनार

जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म दर्शन विभाग

तीन दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित

पर्यावरण संरक्षण एवं विश्व-शान्ति जैन जीवन शैली से संभव - प्रो. दूगड़

जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग द्वारा 24-26 फरवरी, 2017 को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के आर्थिक सौजन्य से *Engaging Jainism with Modern Issues* विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया। सेमीनार उद्घाटन के अवसर पर समागत प्रो. एस.आर. भट्ट (चेयरमेन आई.सी.पी.आर.), प्रो. नरेश दाधीच (पूर्व कुलपति, वर्धमान खुला विश्वविद्यालय, कोटा) प्रो. चन्द्रकला पड़िया (चेयरमेन आई.आई.ए.एस. शिमला), डॉ. एन.एल. कच्छारा, प्रो. दयानन्द भार्गव, प्रो. महावीर राज गेलरा, प्रो. प्रेम सुमन जैन आदि ने संगोष्ठी को प्रासंगिक बताया तथा जैन धर्म-दर्शन के विविध आयामों का सामाजिक योगदान को प्रतिपादित किया।

इस संगोष्ठी में देश के विविध प्रान्तों से लगभग 120 प्रतिभागियों ने सहभागिता की। संगोष्ठी में समागत प्रतिभागियों के आलेख वाचन एवं चर्चा-प्रतिचर्चा हेतु दस तकनीकि सत्रों का संचालन किया गया। समागत विशिष्ट विषय विशेषज्ञों के द्वारा तीन पेनल डिस्कसन सत्रों का भी आयोजन किया गया। प्रो. दयानन्द भार्गव, प्रो. एम.आर. गेलरा, डॉ. एन.एल. कच्छारा एवं प्रो. प्रेम सुमन जैन के संगोष्ठी के विषय को आधार बनाकर विशेष व्याख्यान आयोजित किये गये तथा समागत प्रतिभागियों ने चर्चा-प्रतिचर्चा द्वारा जिज्ञासाओं को शांत किया।

संगोष्ठी का उद्घाटन संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता तथा प्रो. एस.आर. भट्ट के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सम्बोधित करते हुए प्रो. दूगड़ ने कहा- जैन जीवन शैली से वर्तमान वैश्विक समस्याओं का निराकरण संभव है। यह पर्यावरण संरक्षण के लिये जहां अपना महत्व रखती है वहीं शांति की दिशा में भी सार्थक है। कार्यक्रम का प्रारंभ संस्थान के कुलगीत से किया गया। विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने समागत सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। संगोष्ठी की निर्देशिका प्रो. समणी चैतन्यप्रज्ञा ने संगोष्ठी के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। समागत विद्वानों एवं अतिथियों का शॉल-किट एवं साहित्य भेंट कर सम्मान प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने किया। कार्यक्रम का संयोजन सेमीनार के समन्वयक डॉ. योगेश जैन ने किया।

STATE LEVEL YOUTH CAMP of **Training in Nonviolence, Culture of Peace & Human Rights**

FEBRUARY 20-22, 2017

तीन दिवसीय ''राज्य स्तरीय युवा अहिंसा प्रशिक्षण शिविर''

एक-दूसरे के पूरक बनने से होगा शांति पूर्ण सहवास

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्वावधान में तीन दिवसीय राज्य स्तरीय युवा अहिंसा प्रशिक्षण शिविर 20-22 फरवरी, 2017 को आयोजित किया गया। शिविर के शुभारम्भ सत्र को सम्बोधित करते हुये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा- जीवन में दो विकल्प हैं, हम जीवन को हिंसात्मक भी बना सकते हैं और अहिंसात्मक भी बना सकते हैं। उन्होंने हिंसा व अहिंसा को व्याख्यायित करते हुये बताया कि निषेधात्मक भाव व भय से हिंसा का जन्म होता है। ये हर व्यक्ति में होते हैं, लेकिन इनके नहीं होने पर व्यक्ति अहिंसा की ओर प्रयाण करता है। उन्होंने कहा कि 'परस्परोपग्रहो जीवानाम' सभी प्राणी एक-दूसरे को उपकृत करते हैं। उन्होंने स्वावलम्बी की बजाये परस्परावलम्बी बनने की जरूरत बताते हुये कहा- परस्परता ही सुखी जीवन का आगाज है। प्रो. दूगड़ ने विभिन्न उदाहरण देते हुये बातचीत व व्यवहार में अहिंसक शब्दों का चयन करने, प्राणी मात्र के प्रति चेतना का तादात्म्य स्थापित करने तथा आवश्यकता-पूर्ति व ऐश्वर्य-विलासिता के बीच की दूरी कम करने की आवश्यकता बताई।

जीवन शैली में बदलाव जरूरी

समणी नियोजिका प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने अपने सम्बोधन में कहा- हिंसा के कारणों के निवारण के लिये आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा प्रशिक्षण का प्रारम्भ किया, जिसमें हृदय परिवर्तन करके जीवन शैली को बदलने, दृष्टिकोण बदल कर प्रकृति व पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाने और जीवन में भोग, असंयम व अनियमितता को हटा कर जीवन शैली को सही करने का कार्य किया जाता है। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने हिंसक विचारों के त्याग करने की आवश्यकता बताते हुये कहा कि अहिंसा हमारा स्वभाव है एवं हिंसा विभाव।

अहिंसा के बीजों का बाहर निकालना है

प्रो. अनिल धर ने शिविर के प्रयोजन के बारे में बताते हुये कहा- अहिंसा प्रशिक्षण एक नया प्रयोग लगता है, लेकिन जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में प्रारम्भ से ही इसका अलग विभाग बना हुआ है। इसका उद्देश्य मनुष्य को मनुष्य बनाना है। प्रारम्भ में अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डा. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने शिविर के बारे में जानकारी दी। डॉ. जुगल किशोर दाधीच ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डा. विकास शर्मा ने किया। शिविर में सुजानगढ, सरदारशहर, बीकानेर, चौमूं, लक्ष्मणगढ, जसवंतगढ, सालासर, नोखा, सांडवा, बग्गड़, सूरतगढ, राणावास, पाली आदि विभिन्न क्षेत्रों के महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

द्वितीय दिवस- जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय राज्य स्तरीय युवा अहिंसा प्रशिक्षण शिविर के दूसरे दिन दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने मानवीय मूल्य और अहिंसा विषय पर अपने व्याख्यान में कहा मानवीय मूल्यों से युक्त होने पर ही जीवन की सार्थकता है। अहिंसा में सारे जीवन मूल्य समाहित होते हैं।

अन्याय रोकने के लिये जानकारी जरूरी

शिविर में मानवाधिकारों पर आयोजित सत्र में बोलते हुये एडवोकेट ओमप्रकाश प्रजापत ने कहा आवश्यक जानकारी के अभाव में पीड़ित को सही मदद पहुंचाने और अत्याचार को रोकने में व्यक्ति विफल रह जाता है। नियमों का पता होने पर मात नहीं खाई जा सकती। इससे पूर्व प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने 'अहिंसा एवं जैन जीवन पद्धति' विषय पर एवं प्रो. अनिल धर ने 'अहिंसा की व्यावहारिक प्रस्तुति' पर अपने व्याख्यान प्रस्तुत किये। शिविर में भाग ले रहे शिविरार्थियों को योगाभ्यास, ध्यान, अनुप्रेक्षा व कायोत्सर्ग करवाये गये।

समापन सत्र- अहिंसा प्रशिक्षण शिविर के समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुये सूरजमल तापड़िया औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक वीके नागर ने कहा है कि हमें प्रकृति ने समस्त आवश्यक वस्तुयें प्रदान की है, लेकिन हम उनका दोहन मनमर्जी से कर लेते हैं, ये ठीक नहीं है।

पुरस्कार व प्रमाण पत्र वितरित

शिविर के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ रहे प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। गायन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रिया जैन, द्वितीय कोमल राठौड़ और तृतीय स्थान पर सुभाष पूनिया व निकिता दाधीच रहे। अतिथियों ने इन सभी को पुरस्कृत किया और सभी शिविरार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गये।

शांति कायम करने के लिये सामर्थ्यवान बनना जरूरी

अहिंसा एवं शांति प्रशिक्षण के लिये युवा शिविर का आयोजन

अहिंसा एवं शांति की संस्कृति के प्रशिक्षण के लिये एक दिवसीय युवा शिविर का आयोजन 8 फरवरी को हुआ। शिविर के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुये रजिस्ट्रार विनोद कुमार कक्कड़ ने कहा, जब तक बच्चा दिल से सोचता है, वह सही रहता है, लेकिन जब से दिमाग से सोचना शुरू करता है तो समाज की विकृतियां उस पर हावी होने लगती है। हमें समाज को बुनियाद से सुधारना है। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय सामाजिक मूल्यों को मानता है और उन्हीं के प्रसार का कार्य कर रहा है। कक्कड़ ने कहा- अपने आपको समर्थ बनाये बिना किसी को अपनी बात मनवाना मुश्किल होता है। केवल सामर्थ्यवान ही अपनी बात को सबको मनवा सकता है। इसके लिये अच्छी शिक्षा, अच्छा कैरियर, अच्छा व्यक्तित्व, अच्छी भाषा का होना जरूरी है। इन सबसे ही व्यक्ति सामर्थ्यवान बनता है और वह शांति स्थापित कर सकता है।

हर युवा भीतर से मजबूत बने

प्रो. अनिल धर ने अपने सम्बोधन में बताया कि हमारी युवा शक्ति पर ही आने वाले भारत का दायित्व आयेगा। भारत शक्तिशाली बने, इसके लिये हर युवा को भीतर से मजबूत बनना होगा। दयानन्द सरस्वती उच्च माध्यमिक विद्यालय के निदेशक हरेकृष्ण शर्मा ने बाहरी व आंतरिक हिंसा के बारे में बताया तथा अपने अंदर विचारों की हिंसा, घृणा, द्वेष आदि का त्याग करने की आवश्यकता बताई। प्रारम्भ में विश्वविद्यालय के अहिंसा एवं शांति विभाग के प्रभारी डा. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने युवा शिविर की प्रस्तावना प्रस्तुत की तथा कहा हिसां को समाज से मिटाने के लिये और युवाओं को नई सोच, नई दिशा देने के लिये जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय विभिन्न प्रयास कर रहा है। डा. जुगल दाधीच ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन शिविर संयोजक डा. विकास शर्मा ने किया। युवा शिविर में 100 सम्भागियों ने हिस्सा लिया। इन्हें योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के डा. अशोक भास्कर ने अहिंसा प्रशिक्षण के प्रायोगिक अभ्यास करवाये। युवाओं को अनुप्रेक्षा, विशेष आसन, प्राणायाम एवं विभिन्न यौगिक क्रियाओं का अभ्यास करवाया गया।

International Trip to Florida International University (FIU), USA

Prof. Samani Satya Pragya and Dr. Samani Rohini Pragya continued teaching in the spring semester 2017 after the fall semester 2016 at FIU. In this semester they taught five courses namely, Introduction to Asian Religions, Meditation and Spiritual Development, Healing in Asian Religions, Sanskrit language, Sanskrit Literature of which one was online course. In total one hundred and five students participated in these courses.

Both the Samani ji conducted Preksha Club activities that consists of eighty-five members as well as in the Law Collage of FIU through out the semester. Guest lecture on Jainism were delivered among the graduate students of FIU enrolled with Prof. Steven Vose's. Online guest lectures on Jainism were delivered in the university of Dallas, and Los Angles. Apart from this they visited Rice University of Huston, Texas Duke University of Raleigh, North Carolina. Samani Rohini Pragya gave a introductory speech on the occasion of Bhagwan Mahavira Janma Kalyanaka lecture series at FIU. Samani Satya Pragya and Samani Rohini Pragya were the panelists on film screening on Santhara: A Challenge to Indian Secularism. Samani ji organized a intensive meeting of Jain Education and Research Foundation (JERF) at FIU regarding the planning and projects of JERF.

Guest lectures arranged in the department of Religious Studies, as well as other forums of FIU were well received by Samani ji. They participated in the conference on Women in Philosophy arranged by Philosophy Club. Samani Rohini Pragya became the complementary winner in the Library Fair arranged by FIU library.

Annual Preksha Mediation Camps for three days were organized by respective JVB centers of Orlando and London in which both the samani ji were resource persons. Lectures on A's of Jainism were delivered throughout the year in Jain Temple, Miami dealing lectures on Ahimsa, Aparigrha, Anekanta, Anushasan, Abhay, Arhat, Anukampa etc. Participation in Vegan club, Plant based diet club, Tao Temple lectures with Master Lee on Chinese Religion and Philosophy was part of the stay at Miami.

We had wonderful co-operation from the Dean John Stack, Head of Religious study Department Prof. Erick Larson, Prof. Steven Vose, Director of Jain Studies Professorship Chair, Admistrative department Luz, Yusimi and all at FIU and the entire Jain community of Miami as well as all who were in touch from different states of North America.

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

प्राच्य विद्या के लिये विशेष योजना की घोषणा, दूरस्थ शिक्षा की सम्पर्क कक्षायें आयोजित

विद्यार्थी के भीतर छिपी क्षमताओं को उभारना ही शिक्षा- प्रो. दूगड़

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा- विद्यार्थी के भीतर छिपी हुई क्षमताओं को उभारना ही शिक्षा है। किसी का आकलन इस बात से ही नहीं किया जा सकता कि वह क्या कर रहा है, बल्कि यह देखा जाना भी जरूरी है कि वह क्या कर सकता है। वे यहां दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के तहत एम.ए. योग एवं जीवन विज्ञान की 30 दिवसीय (1 मई से 30 मई) सम्पर्क व प्रशिक्षण कक्षाओं के समापन समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने अनेकांत सिद्धांत के बारे में बताते हुये कहा- जो मैं कह रहा हूं, वही सही नहीं है, बल्कि दूसरे जो कह रहे हैं, उसमें भी सत्यता हो सकती है, इसे स्वीकार करना होता है। हम सब सत्य का अंश कहते हैं, वह पूर्ण सत्य नहीं है। पूर्ण सत्य के लिये दूसरों के विचारों को भी आदर देना होता है, यही अनेकांत है।

नि:शुल्क आवास-भोजन सहित छात्रवृति

कुलपति प्रो. दूगड़ ने इस अवसर पर विद्यार्थियों को जानकारी देते हुये कहा- विश्वविद्यालय ने एक योजना शुरू की है, जिसमें जैन विद्या तथा प्राकृत व संस्कृत भाषा विषयों में एम.ए. करने पर रहने व खाने की सुविधा नि:शुल्क उपलब्ध करवाई जायेगी। साथ ही प्रथम वर्ष में 70 प्रतिशत या अधिक अंक लाने वाले छात्र को 25 हजार रूपयों की अतिरिक्त छात्रवृति भी देय होगी। इसके अलावा रिसर्च करने पर अध्येता को रहने-खाने की सुविधा के बिना 8 हजार रूपये और रहने-खाने की सुविधा सहित 4 हजार रूपये स्कॉलरशिप के दिये जायेंगे। ये सुविधायें इन प्राच्य विधाओं के विकास के लिये विश्वविद्यालय की ओर से दी जा रही है।

ध्यान व योग दु:ख दूर करने के साधन

मुनिश्री स्वस्तिक कुमार ने इस अवसर पर अपने आशीर्वचन में कहा, विद्या मुक्ति देने वाली होती है। बंधन दु:खों का कारण होता है और हर प्राणी दु:खों से मुक्ति चाहता है। आत्मज्ञान होने पर व्यक्ति स्वयं दु:ख-मुक्त हो जाता है और दूसरों को भी दु:ख-मुक्त करता है। उन्होंने ध्यान को मानसिक दु:खों को दूर करने वाला और योग को शारीरिक दु:खों को दूर करने वाला बताया तथा इनके नियमित अभ्यास पर जोर दिया। उन्होंने तनाव मुक्त होने के लिये ध्यान व अनुप्रेक्षा को महत्वपूर्ण साधन बताया। मुनि सुभाष कुमार ने कहा, जीवन को अच्छा बनाने के लिये समय की बरबादी कम करें प्रमाद नहीं करें तथा सकारात्मकता व प्रामाणिकता को अधिक से अधिक व्यवहार में लाना चाहिये। राजूराम पारीक व अन्य विद्यार्थियों ने अपने अनुभव प्रस्तुत किये। डॉ. युवराज सिंह खांगारोत ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने किया।

ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण है आचार पक्ष

इससे पूर्व सम्पर्क कक्षाओं के शुभारम्भ के अवसर पर दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा आचार के पश्चात ही ज्ञान का महत्व होता है और इसी कारण इस विश्वविद्यालय का आधारभूत वाक्य है 'णाणं सारमायरो' यानि ज्ञान का सार आचार है। इस विश्वविद्यालय के संस्थापक एवं प्रथम अनुशास्ता आचार्य तुलसी ने कहा था- आचार पक्ष मजबूत होना चाहिये। कोई कितना ही ज्ञानी हो मगर उसका आचार पक्ष कमजोर हो तो वह सम्मान का हकदार नहीं होता। कार्यक्रम समन्वयक डा. अशोक भास्कर ने सम्पर्क कक्षाओं के नियम एवं निर्देशों के बारे में जानकारी दी तथा बताया कि इन सम्पर्क कक्षाओं में महाराष्ट्र, पंजाब, उत्तर प्रदेश, गुजरात, हरियाणा, सिंगापुर आदि स्थानों से आये विद्यार्थी यहां प्रवास करके सम्पर्क कक्षाओं का लाभ ले रहे हैं।

ग्रामीण महिलाओं को दी उनके कानूनी अधिकारों की जानकारी

दो दिवसीय महिला जागृति कार्यशाला आयोजित

लाडनूं तहसील के ग्राम दुजार में महिला जागृति के लिये दो दिवसीय शिविर 19-20 जनवरी को आयोजित किया गया। संस्थान के समाज कार्य विभाग के तत्वावधान में विधिक जागरूकता के माध्यम से महिला सशक्तिकरण कार्यशाला में ग्रामीण महिलाओं को आवश्यक कानूनी जानकारियां दी गई तथा उनके अधिकारों से उन्हें अवगत करवाया गया। एडवोकेट हिम्मत सिंह, डा. बिजेन्द्र प्रधान, डा. पुष्पा मिश्रा, डा. लक्ष्मण कुमार माली, रिसर्च स्कॉलर रंजीत जायसवाल आदि वक्ताओं ने कार्यशाला में समान वेतन का अधिकार, काम पर हुये उत्पीड़न के खिलाफ अधिकार, नाम नहीं छापने का अधिकार, घरेलू हिंसा के खिलाफ अधिकार, नि:शुल्क कानूनी सहायता पाने का अधिकार, सम्पति सम्बंधी अधिकार आदि के बारे में विस्तार से बताया। कार्यशाला में ग्राम पंचायत दुजार की सरपंच अनिता कंवर, उप सरपंच हनुमानदास, ग्राम सेवक राजकुमार जैन, वार्ड पंच बसंत सैन, रामनिवास, सुमन स्वामी, मुन्नी देवी, गुलाब देवी, राजूदेवी तथा करीब एक सौ से अधिक ग्रामवासी महिलायें उपस्थित रही। कार्यशाला का संचालन जैविभा विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग के विद्यार्थी जीवराज सिंह राठौड़ एवं पूनम सैनी ने किया। पूजा प्रजापत एवं सुमित कटारिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मानवीय मूल्यों के विकास व प्रतिष्ठा में था आचार्य तुलसी का अपूर्व योगदान- प्रो. समणी सत्यप्रज्ञा

संस्थान के प्रथम अनुशास्ता आचार्य तुलसी की 21वीं पुण्यतिथि पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में संस्थान के सेमिनार हॉल में 12 जून को समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्ष अहिंसा एवं शांति विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. समणी सत्यप्रज्ञा ने अपने सम्बोधन में आचार्य तुलसी को महान क्रांतिकारी संत बताते हुये कहा- उन्होंने मानवीय मूल्यों की प्रतिस्थापना एवं उनके विकास में महत्वपूर्ण एवं अविस्मरणीय योगदान दिया था। उनकी पुण्यतिथि पर उनके मिशन को आगे बढाने एवं उनके जीवन से प्रेरणा लेते हुये मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा का संकल्प लेने की आवश्यकता बताई। प्रो. अनिल धर ने आचार्य तुलसी को शिक्षा में क्रांति का सूत्रधार बताया। उन्होंने जैन समाज में समण श्रेणी का उद्भव करके जैन धर्म और अणुव्रतों के संदेश को विश्व स्तर पर पहुंचाया। विश्वविद्यालय के विताधिकारी आरके जैन ने आचार्य तुलसी की गणना जैन धर्म के महान आचार्यों में करते हुये कहा, जैन धर्म को व्यापक रूप देने में उनका अतीव योगदान रहा। समणी रोहिणी प्रज्ञा ने इस अवसर पर कहा कि आचार्य तुलसी महामानव थे। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा, उनके उत्थान एवं सशक्तिकरण के लिये व्यापक कार्य किया। इस अवसर पर आचार्य तुलसी के जीवन व कर्तृत्व से सम्बंधित एक डॉक्यूमेंटरी फिल्म का प्रदर्शन भी किया गया। अंत में विश्वविद्यालय के सहायक प्रभारी सहायक कुलसचिव विजय कुमार शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने किया। इसके अलावा सुबह तुलसी स्मारक पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मुख्य आतिथ्य में एक प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में प्रो. दूगड़ एवं डा. शांता जैन ने आचार्य तुलसी के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला तथा उनसे प्रेरणा लेकर अपने जीवन को संवारने की आवश्यकता बताई।

आचार्य महाश्रमण के जन्मोत्सव पर कार्यक्रम आयोजित

सत्यनिष्ठा व अहिंसा निष्ठा ने बनाया उन्हें अभय- कुलपति

तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें आचार्य एवं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के तीसरे अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण जन्मोत्सव एवं पट्टारोहण दिवस 4 मई को समारोह पूर्वक मनाया गया। विश्वविद्यालय के शैक्षणिक खंड स्थित सेमिनार हॉल में मंगल भावना समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने आचार्य महाश्रमण की जीवनचर्या और कठिन तप भावना पर प्रकाश डाला तथा बताया कि वे सदैव जिज्ञासा प्रवृति के थे और यह प्रवृति उन्हें सत्य तक पहुंचाती रही। उन्होनें उनकी अनुशासन निष्ठता, सत्यनिष्ठा व श्रमनिष्ठा के उदाहरण देते हुये उनके विनय भाव को भी बहुमान दिया तथा उन्होंने कहा कि वे अपनी सत्यनिष्ठा व अहिंसा निष्ठा के कारण अभय को प्राप्त हो गये। इस अवसर पर कुलपति प्रो. दूगड़ ने सभी उपस्थित जनों से सत्यनिष्ठ, अहिंसा निष्ठ व पापभीरू बनने के लिये प्रेरित करते हुये सभी से नशामुक्त जीवन जीने के लिये संकल्पित किया। प्रो. दामोदर शास्त्री ने आचार्य महाश्रमण को पुरूषार्थ व तपस्या का प्रतीक बताया। समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञा ने अपने सम्बोधन में आचार्य महाश्रमण को महातपस्वी, आहार संयमी, इंद्रिय संयमी, सत्यजीवी एवं श्रमजीवी उपमायें देते हुये कहा कि वे सत्य के प्रति समर्पित रहते हुये हमें आध्यात्मिक मार्गदर्शन देते रहते हैं। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि आचार्य महाश्रमण नैतिकता, सद्भावना और नशामुक्ति को केन्द्र में रखकर गांव-गांव, ढाणी-ढाणी, पहाड़ी, दुर्गम इलाकों से होकर भी यात्रा कर रहे हैं। उन्होने आचार्य महाश्रमण को वैयाकरणों में प्रमुख और मितभाषी बताया। डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने उन्हें संयम का प्रतीक बताया। समणी मृदुप्रज्ञा ने आचार्य महाश्रमण के लिये स्तुतिमय गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ डा. योगेश जैन के मंगलाचरण से किया गया। अंत में रजिस्ट्रार वीके कक्कड़ ने आभार ज्ञापित किया।

आचार शुद्धि, व्यवहार शुद्धि व विचार शुद्धि का मार्ग है महावीर का दर्शन- मुनि स्वस्तिक कुमार

संस्थान के ऑडिटोरियम में 8 अप्रेल को मुनिश्री स्वस्तिक कुमार व मुनिश्री हिमांशु कुमार के सान्निध्य में एवं दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में महावीर जयंती समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में सेवा केन्द्र व्यवस्थापक मुनिश्री स्वस्तिक कुमार ने कहा, महावीर के दर्शन में अहिंसा, अपरिग्रह व अनेकांत के सिद्वांत व्यक्ति में आचार शुद्धि, व्यवहार शुद्धि व विचार शुद्धि करने का मार्ग है। हर व्यक्ति को इन्हें अपना कर अपना जीवन महत्वपूर्ण बनाना चाहिये।

सत्य सर्वदा व सबके लिये होता है

मुनिश्री हिमांशु कुमार ने कहा- महापुरूषों का जीवन कालजयी व कालातीत होता है। उस पर समय की पर्तें नहीं जम पाती। उनकी जीवन गाथा की एक-एक पंक्ति प्रेरणा होती है। उन्होंने कहा कि सत्य के लिये कोई कारा या बंधन नहीं होता; सत्य सबके लिये और सर्वदा रहता है। सत्य कभी अनुकूल नहीं होता, बल्कि हमें ही सत्य के प्रति अनुकूल बनना पड़ता है। सत्य कड़वा होता है, लेकिन उसे जीवन में उतार लेने वाले का जीवन मीठा बन जाता है। उन्होंने भगवान महावीर के जीवन को प्रायोगिक बताते हुये कहा उसे केवल सुनना-समझना नहीं है, बल्कि उसे अपने जीवन में उतारें।

खुद को बनायें यशोगान के लायक

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि महावीर का जीवन समता, सहिष्णुता, संयम आदि से ओतप्रोत था, हमें उनके गुणों का अनुकरण करना चाहिये। उन्होंने भारत की महानता के पीछे महावीर, बुद्ध, विवेकानन्द, गांधी वगैरह को बताते हुये कहा कि हम इन महापुरूषों का केवल यशोगान ही नही करें, बल्कि अपने आप को इस योग्य बनावें कि आने वाली पीढियां हमारा यशोगान करे। मुख्य अतिथि प्रो. अनिल धर ने कहा- भगवान महावीर के संदेशों को साम्प्रदायिक नहीं बनावें, बल्कि उन्हें जन जन तक पहुंचा कर उपयोगी बनावें। विताधिकारी आरके जैन ने कहा कि आदमी अपने भाग्य का खुद ही निर्माता होता है। उसे अपने कर्मों का फल भुगतना पड़ता है। उन्होंने महावीर के सिद्धांतों को समेट कर रखने को गलत बताते हुये कहा कि उन्हें जीवन में लायें और उन्हें समाज का आधार बनावें। डा. योगेश जैन व डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने भगवान महावीर के सिद्धांतों की प्रासंगिकता बताई। कार्यक्रम में डा. अमिता जैन व सुरक्षा जैन ने भजन प्रस्तुत किये।

जैनविद्या एवं अंग्रेजी विभाग की सामूहिक विदाई वेला सम्पन्न

संस्थान के जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग एवं अंग्रेजी विभाग के संयुक्त आयोजना में उत्तरार्द्ध के विद्यार्थियों को विदाई पार्टी एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन 16 अप्रेल को किया गया। यह आयोजन एम.ए. पूर्वार्द्ध के विद्यार्थियों द्वारा किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि एवं विभागाध्यक्षा प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने सफल जीवन के लिए अपने लक्ष्य का निर्धारण, समय का सदुपयोग, शक्ति का सदुपयोग और परोपकार की भावना रखना इन चार बातों के माध्यम से विद्यार्थियों को सम्बोधित किया। अध्यक्षीय उद्बोधन के रूप में संस्थान के कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने कहा, क्वालिटी पर विश्वास होना चाहिए न कि क्वान्टिटी पर। आज भौतिकवादी युग क्वान्टिटी की होड़ में क्वालिटी को अनदेखा कर रहा है जबकि सफलता प्राप्त करने के लिए क्वालिटी की आवश्यकता होती है। समणी सुलभप्रज्ञा ने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन विनय जैन ने तथा अंग्रेजी विभाग की छात्रा माया पारीक ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर विभाग की डॉ समणी शशिप्रज्ञा, समणी अमलप्रज्ञा, मुमुक्षु मधुमिता, अजिता, सोनम, धरद जैन, तनमय जैन, अक्षय जैन, कंचन शर्मा आदि उपस्थित थे।

27वाँ स्थापना दिवस

20 मार्च, 2017

मूल्यों के अवमूल्यन को रोकने का काम करे विश्वविद्यालय- प्रो. बिजानियां

जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के 27वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर 20 मार्च को महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय बीकानेर के कुलपति प्रो. भागीरथ सिंह बिजानियां ने चरित्र निर्माण एवं मानवता के लिये निवेश करने की आवश्यकता बताते हुये कहा कि देश में मूल्यों का जो अवमूल्यन हो रहा है, उसके लिये विश्वविद्यालयों को काम करना होगा। उन्होंने विद्यार्थियों के लिए अपनी माँ का सम्मान व आशीर्वाद तथा परमात्मा की कृपा को भी जरूरी बताया। उन्होंने चरित्र निर्माण व मानवता के निर्माण की शिक्षा को विश्वविद्यालयों के लिये आवश्यक बताया।

आत्म-गौरव बढाने वाला प्रयोग- समारोह के मुख्य वक्ता हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के कुलपति प्रो. कुलदीप चन्द्र अग्निहोत्री ने अपने सम्बोधन में अंग्रेजों द्वारा स्थापित की गई आधुनिक विश्वविद्यालयों की श्रृंखला में रविन्द्र नाथ टैगोर के विश्व भारती, स्वामी श्रद्धानन्द के गुरूकुल कांगड़ी और महात्मा गांधी के विद्यापीठ की कड़ी में सबसे सफल जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय को बताते हुये कहा, आचार्य तुलसी के इस प्रयोग को आज विस्तारित रूप में देख कर वे खुश है। उन्होनें यह भी बताया कि इस देश में तक्षशिला, विक्रमशिला आदि विश्वविद्यालय उस समय थे, जब पूरे विश्व में कहीं भी इस बारे में कोई सोच तक नहीं थी। उन्होंने उस प्राचीन परम्परा के पुनरोत्थान की आवश्यकता बताई।

संस्कृति से जुड़े रह कर करेंगे चुनौतियों का मुकाबला- जैविभा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने समारोह की अध्यक्षता करते हुये कहा गुरूदेव तुलसी के स्वप्र के अनुसार यह विश्वविद्यालय केवल शिक्षण प्रधान नहीं होकर प्रयोगधर्मा हैं। यहां व्यक्तित्व निर्माण के लिये केवल विद्यार्थियों को ही नहीं, समाज व देश को मार्गदर्शन प्रदान करने वाला और अध्यात्म व विज्ञान के समन्वय की दिशा में आगे बढने वाला बनाने के लिये हम सबका प्रयास निरन्तर रहना आवश्यक है। प्रो. दूगड़ ने कहा, यह विश्वविद्यालय संस्कृति का केन्द्र है और संस्कृति से सदैव जुड़ाव रहे तथा चुनौतियों का मुकाबला करने में सक्षम बने, यह ध्यान रखना चाहिये। उन्होनें कहा कि यह संस्था का 27वां जन्मदिन है और इस अवसर पर मातृसंस्था जैन विश्व भारती ने विश्वविद्यालय को 20 लाख रूपये का चैक का उपहार दिया है। उन्होंनें मातृ संस्था व विश्वविद्यालय की परस्पर युति बनी रहने की भावना अभिव्यक्त करते हुये पूर्व अध्यक्ष डा. धर्मचंद लूंकड़ व वर्तमान अध्यक्ष रमेश बोहरा के प्रति आभार ज्ञापित किया। उन्होंने इस स्थापना दिवस की समस्त व्यवस्थायें महिलाओं द्वारा कुशलता पूर्वक संभाले जाने पर उनका आभार जताया।

जहां चरित्र निर्माण हो, वहां पीछे मुड़कर नहीं देखना पड़ता- समारोह को सान्निध्य प्रदान करते हुये मुनि स्वस्तिक कुमार ने कहा, संस्थान का उद्देश्य नैतिक मूल्यों का विकास व चरित्र का निर्माण है और जहां चरित्र का निर्माण होता है, उसे मुड़कर देखने की आवश्यकता नहीं होती। उन्होंनें विश्वविद्यालय के लिये शुभाशीष प्रदान करते हुये कहा, आचार्य तुलसी ने जो लक्ष्य दिया था, वैसा ही विकास इसके द्वारा किया जा रहा है। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष रमेश चंद बोहरा व पूर्व अध्यक्ष डॉ. धर्मचंद लूंकड़ ने अपने सम्बोधन में विश्वविद्यालय की उन्नति के लिये भावना व्यक्त की। समणी नियोजिका समणी ऋजुप्रज्ञा ने भी संबोधित किया। कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने समारोह में वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। डा. जुगल किशोर दाधीच ने अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया।

आकर्षक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां एवं योगासनों का प्रदर्शन- स्थापना दिवस समारोह के दूसरे हिस्से में सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुतियां छात्राओं ज्योति एवं समूह, कृष्णा एवं समूह, सुमन सिमर, तृप्ति एवं समूह, अंकिता, प्रियंका, दीप्ति, माया व समूह, प्रगति, किरण एवं समूह, अमित सोनी आदि ने दी। विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र एवं वर्तमान में आयुष मंत्रालय में क्वालिटी ऑफ इंडिया में कार्यरत अबोध श्रीवास्तव ने अपने विश्वविद्यालयी अनुभवों के साथ योग शिक्षा के महत्व को समझाया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के छात्र-छात्राओं ने योगासनों की विभिन्न मुद्राओं की आकर्षक प्रस्तुतियों से सभी को अचंभित कर दिया। समारोह में लाडनूं के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

प्रसार भाषण माला का आयोजन

समग्र विकास के लिये जीवन में योग का समावेश आवश्यक : प्रो. भट्टाचार्य

शिक्षा विभाग में 24 जनवरी, 2017 को प्रसार भाषण माला के अन्तर्गत आयोजित व्याख्यानमाला कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुये बंगाल के शान्ति निकेतन विश्वविद्यालय के प्रो. जगतराम भट्टाचार्य ने विद्यार्थियों को जीवन जीने की कला सिखाई और अपने व्याख्यान में कहा, शिक्षण-प्रशिक्षण के दौरान प्रज्ञान, ज्ञान एवं सूचना का समन्वित रूप विद्यार्थी में होना चाहिए। उन्होनें कहा कि हर व्यक्ति को अपने आप को एक विद्यार्थी के रूप में देखना-समझना चाहिए, अन्यथा हमारा विकास अवरूद्ध हो जायेगा। उन्होंने सर्वांगीण विकास के लिये प्रत्येक क्रिया जैसे उठना, बैठना, चलना, बोलना सबके प्रति सजग रहने और उनमें योग का समावेश करने पर जोर दिया तथा कहा कि हर व्यक्ति की दिनचर्या में योग का अस्तित्व हर कहीं मौजूद रहना आवश्यक है। उन्होंने कहा जीवन के सभी पक्षों को हमें मजबूत करना है तो समग्र दृष्टिकोण से जीवन जीने की कला को समझना आवश्यक है। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

उच्च शिक्षा व कैरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित

जैन विश्व भारती संस्थान की ओर से जसवंतगढ कस्बे के विभिन्न विद्यालयों में उच्च शिक्षा और कैरियर के निर्माण एवं विषय पर विद्यार्थियों के मार्गदर्शन के लिये विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन 13 फरवरी को किया गया। विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के प्रो. बीएल जैन ने कार्यक्रम में शिक्षा के क्षेत्र में कैरियर निर्माण के सम्बंध में बोलते हुये कहा, विश्वविद्यालय में चल रहे चार वर्षीय बीए-बीएड एवं बीएससी-बीएड पाठ्यक्रमों के द्वारा विद्यार्थी सीनियर सैकेंडरी के बाद शिक्षा के क्षेत्र में सीधा प्रवेश ले सकता है। उन्होंने शिक्षा की राष्ट्र-निर्माण में महत्ती भूमिका पर प्रकाश डाला तथा इस क्षेत्र को विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिये श्रेष्ठ बताया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग के प्रभारी डा. बी. प्रधान ने सोशल वर्क क्षेत्र में शिक्षा हासिल करने एवं कैरियर बनाने के बारे में बताया। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की प्राचार्या डा. अमिता जैन ने महिला शिक्षा की व्यवस्थाओं एवं कन्याओं के आगे बढने के रास्तों पर प्रकाश डाला। डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. आभा सिंह, डॉ. विष्णु कुमार, डा. गिरीराज भोजक, डॉ. अदिति गौतम, डॉ. सरोज राय आदि ने विद्यार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान किया। विश्वविद्यालय की इस टीम ने राजकीय तापड़िया सीनियर सैकेंडरी स्कूल, श्री भवानी निकेतन राजकीय बालिका हायर सैकेंडरी स्कूल व प्यारीदेवी हनुमानबख्स तापड़िया हायर सैकेंडरी स्कूल में मार्गदर्शन कार्यक्रमों का आयोजन किया। दल सुजला कॉलेज में भी पहुंचा जहां की व्यवस्थाओं, लैबोरेट्री, लाईब्रेरी आदि का निरीक्षण किया तथा वहां विद्यार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान किया।

ज्ञान का दायरा बढाने के लिये कक्षा के दायरे से निकलें

प्रसार भाषण माला का आयोजन

शिक्षा विभाग में 25 जनवरी को आयोजित प्रसार भाषण माला के अन्तर्गत विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार वीके कक्कड़ ने छात्राध्यापिकाओं को 'कैसे सिखायें कक्षा के बाहर' विषय पर बोलते हुये कहा- बच्चों के सम्पूर्ण विकास के लिये कक्षाओं के दायरे के अलावा उन्हें आउटडोर शिक्षण दिया जाना भी आवश्यक है। उन्होंने अपने व्याख्यान में बताया कि बच्चे प्रत्यक्ष देखे हुये को जल्दी ग्रहण करते हैं। उन्हें दृश्यावलोकन से सीधा अनुभव होता है। बच्चों को कक्षा में पाठ्यपुस्तकों से सिखाये गये ज्ञान का प्रत्यक्ष अनुभव बाहर के भ्रमण से हो जाता है। उन्होंने बताया कि इससे उनके ज्ञान का दायरा बढेगा तथा उनमें रचनात्मक प्रवृति पैदा होगी। कक्कड़ ने कहा परस्पर सम्मान एवं नम्रता पूर्ण व्यवहार करने की कला भी बच्चे इस बाहरी भ्रमण के दौरान सीखते हैं। उनकी सोच परिपक्व बनती है तथा सम्पूर्ण विकास संभव होता है। उन्होंने अपने व्याख्यान में आउटडोर शिक्षण की आवश्यकता, विधि, तैयारी आदि सभी सम्बंधित पक्षों के बारे में बताया तथा कहा कि अध्यापक को भ्रमण के लिये लेकर जाने वाले क्षेत्र का पूरा ज्ञान होना आवश्यक है। वहां की भौगोलिक स्थिति, मौसम, सुरक्षा व बचाव के साधन साथ में होने चाहिये। उन्होंने बताया विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम से अनुरूपता रखने वाले स्थान को ही भ्रमण के लिये चुनना चाहिये। अपने व्याख्यान के अंत में उन्होंने छात्राध्यापिकाओं द्वारा पूछे गये सवालों के जवाब देकर उनकी जिज्ञासा को शांत किया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने विषय को महत्वपूर्ण एवं शिक्षण कार्य के लिये नवाचार उपयोगी बताते हुये धन्यवाद ज्ञापित किया।

छात्राध्यापिकाओं को कौशल विकास प्रशिक्षण

शिक्षा विभाग के अन्तर्गत सृजनात्मक कौशल विकास कार्यक्रम का आयोजन 10 फरवरी को किया गया। कार्यक्रम में दिल्ली से आये सेवाराम ने छात्राध्यापिकाओं को पेपर कटिंग से विभिन्न सृजनात्मक वस्तुओं के निर्माण की विधियां बताई तथा उन्हें प्रेक्टिकल बनाना सिखाया। कार्यक्रम में फूल, गुलदस्ते एवं अन्य पेपर डिजाईनें छात्राओं ने सीखने के बाद निर्माण में सहभागिता निभाते हुये उन्हें अपने हाथों से निर्मित किया। विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने इस अवसर पर कहा- हस्त कौशल से व्यक्तित्व का विकास भी होता है। हर विद्यार्थी में कौशल विकास आवश्यक है।

स्वामी विवेकानन्द जयंती मनाई

संस्थान में 12 जनवरी को विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन की अध्यक्षता में स्वामी विवेकानन्द जयन्ती का आयोजन किया गया। प्रो. जैन ने इस अवसर पर अपने सम्बोधन में स्वामी विवेकानन्द को एक महान दार्शनिक, संत, राष्ट्रभक्त तथा शिक्षाविद के रूप में रेखांकित करते हुये कहा, वे पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा व्यवहारिक ज्ञान पर बल देते थे। कार्यक्रम में डा. गिरीराज भोजक, डा. गिरधारीलाल शर्मा, रागिनी शर्मा, सरिता यादव, अंजू चौयल, सरिता शर्मा व अदिति कंवर ने सम्बोधित करते हुये स्वामी विवेकानन्द के जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला तथा उन्हें आधुनिक भारत की अवधारणा का प्रणेता बताया। कार्यक्रम का संचालन डा. अमिता जैन ने किया।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया

शिक्षा विभाग ने अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन की अध्यक्षता में 8 मार्च को कार्यक्रम आयोजित किया। प्रो. जैन ने पुरूष व महिला के बीच सामंजस्य स्थापित करने की जरूरत बताते हुये नारी शिक्षा को बढावा देने की आवश्यकता पर बल दिया। इस अवसर पर विभाग के शैक्षिक सदस्यों एवं छात्राध्यापिकाओं ने भी महिलाओं के सशक्तिकरण पर अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन डा. गिरधारी शर्मा ने किया।

विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग में इस अवसर पर प्रभारी कुलसचिव प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में कार्यक्रम आयोजित किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बिजेन्द्र प्रधान ने महिला दिवस के महता बताई। डा. पुष्पा मिश्रा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन सुनिल शर्मा ने किया।

महाशिवरात्रि पर्व का आयोजन

शिक्षा विभाग के अन्तर्गत महाशिवरात्रि पर्व का आयोजन 23 फरवरी को किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ संकाय सदस्यों द्वारा भगवान शिव-पार्वती को पुष्पांजलि अर्पण एवं आरती के साथ किया गया। कार्यक्रम में छात्राध्यापिकाओं ने सुन्दर गीतों की प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सरोज राय ने किया।

फागोत्सव मनाया

शिक्षा विभाग व आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में फागोत्सव कार्यक्रम का आयोजन 11 मार्च को किया गया। कार्यक्रम में सभी ने परस्पर गुलाल लगाकर होली मनाई। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने भारतीय त्यौंहारों का महत्व बताया तथा होली मनाने के पीछे की कहानी के अर्थ को समझाया। उन्होंने होली पर आपसी द्वेष-भाव को छोड़ कर परस्पर सौहार्द का व्यवहार करने की आवश्यकता बताई। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की प्राचार्या डा. अमिता जैन ने होली को खुशियों का त्यौंहार कहा। कार्यक्रम में डा. मनीष भटनागर, डा. प्रगति भटनागर व सुरेन्द्र कुमार ने भी अपने विचार व्यक्त किये। डॉ. गिरधारीलाल शर्मा ने आभार ज्ञापित किया।

जीवन के हर क्षेत्र में है विज्ञान की दखल- प्रो. जैन

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया

शिक्षा विभाग के अन्तर्गत राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 26 फरवरी को आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुये विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने विज्ञान को विस्तार पूर्वक समझने की आवश्यकता बताते हुये कहा- केवल भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान या जीव विज्ञान आदि विषयों तक ही विज्ञान को सीमित नहीं समझना चाहिये, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में विज्ञान को समझना चाहिये। चाहे अर्थ का क्षेत्र हो, समाज का, राजनीति का या व्यवहार का सभी में विज्ञान की दखल मौजूद है। यह विज्ञान का विस्तार है। आज तो अध्यात्म के प्राचीन विज्ञान को भी आधुनिक विज्ञान फिर से अपनी शोध का विषय बना रहा। इस अवसर पर अन्य शिक्षकों ने भी अपने विचार रखें। छात्रा प्रज्ञा भाटी, अंजलि रैवाड़, भावना अंगारून ने भी विज्ञान दिवस मनाये जाने के पीछे की कहानी एवं भारत के प्राचीन व अर्वाचीन वैज्ञानिकों व उनकी उपलब्धियों के बारे में बताया। डॉ. गिरधारीलाल शर्मा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मनीष भटनागर ने किया।

मकर संक्रांति व लोहडी

शिक्षा विभाग के अन्तर्गत 13 जनवरी को लोहडी व मकर संक्रांति पर्व मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने इन त्यौंहारों की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुये इनके भारतीय संस्कृति में योगदान को चित्रित किया।

कार्यक्रम में मनप्रीत कौर, पूजा वशिष्ठ व धर्मशिखा ने लोहडी व मकर संक्रांति के मनाये जाने के पीछे के कारण व कहानी को बताया तथा सूर्य के उत्तरायण आने को एक पर्व की संज्ञा देते हुये इसे हर व्यक्ति ही नहीं समूची प्रकृति के लिये एक त्यौंहार बताया। कार्यक्रम का संचालन डा. विष्णु कुमार ने किया।

डा. अम्बेडकर के समरसता सिद्धांत को फैलाने की जरूरत- प्रो. जैन

शिक्षा विभाग में डा. भीमराव अम्बेडकर जयंती के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन 13 अप्रेल को किया गया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुये विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा, समाज में व्याप्त विषमताओं को त्याग कर प्रत्येक वर्ग, जाति को बराबरी देने के हिमायती डा. अम्बेडकर ने समाजिक समरसता का रास्ता दिखाया था। उन्होंने निम्न वर्ग, उच्च वर्ग की अवधारणाओं के विरूद्ध हर प्रकार की असमानता को छोड़कर समानता के मार्ग पर बढने के लिये पूरे देश को प्रेरित किया था। आज उनके बताये हुये मार्ग पर चलने की तथा समरसता के सिद्धांत को फैलाने की आवश्यकता है। सहायक आचार्य डा. विष्णु कुमार ने कहा कि समाज में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने के लिये आज भी डॉ. अम्बेडकर से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। डॉ. गिरीराज भोजक ने कहा भारत रत्न डा. भीमराव अम्बेडकर की विचारधारा को प्रचारित करने की जरूरत है, ताकि समाज को उसके अनुकूल बनाया जा सके।

बसंत पंचमी पर्व मनाया

शिक्षा विभाग के अन्तर्गत बसंत पंचमी के अवसर पर सरस्वती पूजा का आयोजन 1 फरवरी को किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने बसंत पंचमी के महत्व पर प्रकाश डाला तथा बदलते हुये मौसम और उसके जनजीवन पर पडने वाले असर के बारे में बताया। कार्यक्रम में छात्राओं द्वारा विचाराभिव्यक्ति करने के साथ भजन प्रस्तुत किये गये। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. आभा सिंह ने किया।

सड़क सुरक्षा पर व्याख्यान आयोजित

सुरक्षा के लिये हेलमेट के साथ सभी यातायात नियमों का पालन करें- कुमावत

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में सड़क सुरक्षा विषय पर व्याख्यान का आयोजन 7 फरवरी को किया गया। लाडनूं पुलिस थाना के थानाधिकारी इंस्पेक्टर नागरमल कुमावत ने इस व्याख्यान में वाहनों के रजिस्ट्रेशन नम्बरों से लेकर उसकी आवश्यकता, सड़क दुर्घटनायें होने के कारण एवं यातायात के नियम एवं उनके पालन के सम्बंध में विस्तार से बताया तथा वाहन का रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र, इंश्योरेंस व ड्राईविंग लाईसेंस की अनिवार्यता के बारे में जानकारी दी तथा कहा, सबसे ज्यादा मौतें सिर की चोट की वजह से होती है इसलिये मोटर साईकिल, स्कूटी वगैरह चलाने पर अच्छी क्वालिटी के हेलमेट का प्रयोग आवश्यक रूप से करना चाहिये। दुपहिया वाहनों पर दो से ज्यादा व्यक्तियों के नहीं बैठने को सुरक्षा के लिये जरूरी बताया। उन्होंने वाहन चलाते समय मोबाईल से बात नहीं करने, चार पहिया वाहन में सीट बेल्ट का उपयोग करने, सड़क पर लगे संकेतकों का पालन करने, रेड लाईट वगैरह का ध्यान रखे जाने, डिवाइडर होने पर गलत साईड से वाहन नहीं निकालने, लोडिंग वाहन का पैसेंजरों को लाने-ले जाने के लिये काम में नहीं लेने के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

नियम और अनुशासन को बंदिश नहीं मानें

विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार विनोद कुमार कक्कड़ ने अपने सम्बोधन में कहा- यातायात के अनुशासन की तरह से ही जीवन को भी अनुशासित करें तथा अनुशासन को अपनी आदत बनावें। उन्होंने कहा कि नियम और अनुशासन को बंदिश नहीं समझें, यह आगे बढने का रास्ता है। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की प्रिंसिपल डॉ. अमिता जैन ने आभार ज्ञापित करते हुये यातायात नियमों के पूर्ण पालन करने की हिदायत दी। प्रारम्भ में सहायक आचार्य डॉ. जुगल किशोर दाधीच ने उनका परिचय दिया तथा थानाधिकारी कुमावत को स्मृति चिह्न व पुस्तक प्रदान करके सम्मानित किया गया।

पल्स पोलियो अभियान में एनएसएस के स्वयंसेवकों को प्रशिक्षण

पल्स पोलियो अभियान में संस्थान के राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के करीब 100 स्वयंसेवक विद्यार्थियों को क्षेत्र के समस्त पोलियो बूथों पर अपनी सेवायें प्रदान करने व घर-घर जाकर जीरो से पांच साल के बच्चों को पोलियो ड्रॉप्स पिलाने के लिये आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 28 जनवरी को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। स्थानीय राजकीय चिकित्सालय से आई प्रशिक्षकों की टीम के प्रभारी डॉ. बी.आर. सारण ने स्वयंसेवकों को सामान्य बीमारियों के बारे में जानकारी देते हुये पल्स पोलियो कार्यक्रम की रणनीति एवं प्रक्रिया के बारे में बताया तथा पोलियो की रोकथाम, टीकाकरण, बच्चों को टीकाकरण के बाद अंगुली पर मार्क करने, डोर-टू-डोर विजिट करने, दवा की देखरेख करने आदि बिन्दुओं पर विस्तार से समझाया। टीम के सदस्यों गोपाल सिंह, डेगाराम आदि ने भी पल्स पोलियो पर व्यावहारिक तौर पर की जाने वाली प्रक्रियाओं के बारे में बताया तथा क्षेत्र के समस्त पोलियो बूथ वार स्वयंसेवकों की सूचि तैयार की। संस्थान के समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष एवं एनएसएस के समन्वयक डा. बी. प्रधान ने राष्ट्रीय सेवा योजना के बारे में जानकारी दी। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉ. प्रगति भटनागर ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन समाज कार्य विभाग के फील्ड सुपरवाईजर डॉ. लक्ष्मण कुमार माली एवं शोध अध्येता रणजीत जयसवाल ने किया।

युवा पंजीकरण महोत्सव के तहत शिविर आयोजित

राज्य निर्वाचन आयोग की ओर से चलाये जा रहे युवा पंजीकरण महोत्सव के तहत यहां आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में एक शिविर का आयोजन किया जाकर महिला मतदाताओं के नामों को निवार्चक नामावलियों के लिये पंजीकृत किया गया। निर्वाचन विभाग के पर्यवेक्षक इन्द्रचंद जांगिड़ ने इस अवसर पर छात्राओं को मतदान के महत्व, योग्यता और मतदाता सूचियों में नाम जोड़े जाने की प्रक्रिया के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने युवा एवं महिला मतदाताओं की संख्या बढाये जाने की आवश्यकता बताई। इस अवसर पर उपखंड कार्यालय की चुनाव शाखा के कार्मिकों व बीएलओ ने मतदान सूचियों में नाम जोड़े जाने के प्रपत्र भरवाये। शिविर में चुनाव प्रभारी कन्हैयालाल सोनी, मुर्तजा अली, सुरेन्द्र सिंह, महेन्द्र, सुदेश एवं बीएलओ पुनीत वर्मा, रवि कुमार व मो. शरीफ ने अपनी सेवायें दी।

आगे बढने की ललक पैदा करें-कुलपति

समारोह पूर्वक मनाया अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च को समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अपने सम्बोधन में कहा, सदैव उत्साहित रह कर परस्पर सहयोग करके आगे बढें। उन्होंने उपस्थित छात्राओं से हौसला व उत्साह बनाये रख कर परस्पर सहयोग की भावना से काम करने की सलाह दी। अरूणिमा सिन्हा का उदाहरण देते हुये उन्होंनें बताया कि उसने ट्रेन के हादसे में अपने पैर गंवा दिये लेकिन उसका हौसला था कि उसने नकली पांव से एवरेस्ट फतह किया। उन्होंने सुधा चन्द्रन के बारे में बताया कि उसके पैर काटने पड़े थे, लेकिन फिर भी वह अपने साहस के बल पर नृत्यांगना है। इसी प्रकार उन्होंने साहना नेहवाल, करीना कपूर, सुमित्रा महाजन, बरखा दत्त आदि विभिन्न मजबूत इरादों वाली सशक्त महिलाओं का जिक्र करते हुये कहा- महिलायें सभी क्षेत्रों में आगे बढ रही है। वे स्वयं सशक्त बन चुकी है। प्रो. दूगड़ ने किसी अन्य से तुलना करने के बजाये स्वयं दूसरों के सामने उदाहरण बनने के लिये प्रेरित किया। उन्होंनें कहा, जीवन में आगे बढने के लिये कोई उम्र नहीं होती, बदलाव कभी भी लाया जा सकता है, इसमें विलम्ब नहीं समझना चाहिये। उन्होनें छात्राओं से अरूंधति रॉय, अरूणिमा सिन्हा आदि की तरह आगे बढने की ललक पैदा करने के लिये प्रेरित किया तथा कहा कि सदैव उत्साहित रहें, लालायित रहेंगे तो आगे बढने की ललक काम करेगी।

दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने घोषा, गार्गी, कात्यायनी, अनुसूईया, द्रोपदी, सीता आदि का उदाहरण देते हुये कहा, हमारे अतीत में नारी का महत्व व सम्मान रहा है। उन्होंने कहा, विद्या की देवी सरस्वती है, धन की देवी लक्ष्मी है और शक्ति की देवी दुर्गा है। मनुष्य को विद्या, धन-सम्पदा, शक्ति की ही आवश्यकता होती है और उसके लिये हमेशा नारी की पूजा ही करनी पड़ती है और आज भी नारी सम्माननीय है। गीता भट्टाचार्य, आरती आदि के नाम गिनाते हुये उन्होंने कहा कि हर क्षेत्र में महिलायें आगे बढ रही है।

कार्यक्रम में सलोनी जैन, ज्योति राजपूत, परवीना डाबड़ी ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि स्त्री शिक्षित होती है तो पूरी पीढी शिक्षित हो जाती है। प्राचार्य डा. अमिता जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम के संयोजक डा. जुगल किशोर दाधीच ने किया।

टैलेंट सर्च कम्पीटिशन में सुप्रिया प्रथम रही

सुजलांचल क्षेत्र की बेटियों को सशक्त, उत्साही और आत्मविश्वास से भरपूर बनाने के लिये आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय द्वारा कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की प्रेरणा से शुरू किये गये विजन-2020 कार्यक्रम के तहत आयोजित टेलेंट सर्च के परिणाम घोषित किये। प्राचार्या डॉ. अमिता जैन ने बताया कि प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर सुजानगढ के गणेशराम झंवर विद्यालय की छात्रा सुप्रिया शर्मा रही। द्वितीय स्थान पर स्थानीय लाड मनोहर बाल निकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय की छात्रा अंतिमा नागपुरिया रही तथा तृतीय स्थान पर बाल भारती विद्यापीठ सुजानगढ की छात्रा अनुपमा सैन रही। इस कंपीटिशन में कक्षा 12वीं तक की कुल 44 छात्राओं ने भाग लिया था।

हमेशा बड़े सपने देखें और अग्रणी बनें– प्रो. दूगड़

विदाई समारोह में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा है, हमेशा लीडर बने, फॉलोअर नहीं। नया मार्ग बनाना काफी कठिन होता है, लेकिन उसके बाद उस मार्ग पर बहुत सारे लोग भी चलेंगे। आपके बनाये मार्ग पर दूसरे सभी चलें, इसके लिये अपनी सोच को हमेशा बड़ी रखें और हमेशा बड़े सपने देखें। अग्रणी बनेंगे तो जीवन में दूसरों के लिये फॉलोअर बन पायेंगे। वे यहां आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में आयोजित 13 अप्रेल को विदाई समारोह में सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने फाईनल ईयर की छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य के लिये शुभकामनायें प्रदान की तथा भविष्य में अच्छा बनने एवं अच्छाईयों को फैलाने की आवश्यकता बताई। कुलसचिव विनोद कुमार कक्कड़ ने अपना लक्ष्य तय करने और अपनी आंतरिक शक्ति को बरकरार रखने, जीवन में अनुशासन बनाये रखने, जिज्ञासा कायम रखने तथा बड़ी सोच रखने से सफलता हासिल की जा सकने के बारे में बताया। उन्होंने कहा हैप्पीनेस सफलता से नहीं आती, बल्कि हैप्पीनेस से सफलता आती है। महाविद्यालय की प्राचार्या डा. अमिता जैन ने लक्ष्य निर्धारित करके आत्मविश्वास बनाये रखकर एवं सकारात्मक सोच से आगे बढने के लिये प्रेरित किया। डा. जुगल किशोर दाधीच ने छात्राओं को बी.ए., बी.कॉम. के पश्चात् आगे के अध्ययन के बारे में सुझाव दिये तथा विश्वविद्यालय में संचालित विभिन्न विभागों व पाठ्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने महाविद्यालय की व्यवस्थाओं, सुविधाओं, पढाई व माहौल के बारे में दूसरों को बताने तथा यहां पढने के लिये प्रेरित करने के लिये छात्राओं से अपील की।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति– इस अवसर पर छात्राओं ने भावभीनी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। मानसी ने राजस्थानी नृत्य से सबका मन मोहा, पूजा, ज्योति, मोनिका सांखला, निशा राठौड़, आशा, कंचन, दीप्ति एंड ग्रुप, रेखा, किरण एवं कुलसुम, चेतन, नीलम एंड ग्रुप, उषा ग्रुप, ज्योति ग्रुप, मीना ग्रुप, पूजा ग्रुप आदि ने राजस्थानी एकल व सामुहिक नृत्य, गीत आदि कार्यक्रम प्रस्तुत किये। कार्यक्रम हेमलता की गणेश वंदना से प्रारम्भ किया गया। रिया द्वारा प्रस्तुत मिक्सिंग गीत को सभी ने सराहा। इस अवसर पर छात्राओं ने अपने तीन सालों के अनुभवों की पीपीटी का प्रदर्शन भी किया।

जीवन का लक्ष्य तय करके कड़े परिश्रम से हासिल करें– देशमुख

जिला पुलिस अधीक्षक परिस देशमुख ने कहा है, सफलता के लिये जीवन में लक्ष्य का निर्धारण करना आवश्यक है। इसके बाद उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये कठिन परिश्रम करना चाहिये। युवाओं को अपनी रूचि व योग्यता के आधार पर अपना प्रोफेशन तय करना चाहिये। वे यहां जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में गर्मियों की छुट्टियों में संचालित समर स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम के समापन समारोह 28 मई को मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने महाराणा प्रताप व छत्रपति शिवाजी को याद करते हुये कहा, उनके जीवन से हमें प्रेरणा लेनी चाहिये। उनके सिद्धांतों, आदर्शों और कार्यों के आधार पर अपने जीवन का मार्ग सुनिश्चित करना चाहिये। उन्होंने कहा, शैक्षणिक गतिविधियों के अलावा रूचि के अनुसार अनेक क्रियाकलाप होने से प्रतिभाओं को आगे बढने का मौका मिलता है। जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विषय की विभागाध्यक्ष समणी प्रो. ऋजुप्रज्ञा ने इस अवसर पर कहा, जीवन में कुछ करने की, कुछ नया जानने की एवं कुछ बनने की हमेशा चाहत रखें। अपने कौशल को निखारें, स्वभाव को शुद्ध बनावें तथा प्रतिभा को निखारने के लिये सचेष्ट रहें। इसके लिये अपने जीवन का सदैव आत्मावलोकन करते रहें। कार्यक्रम का प्रारम्भ समणी मृदुलप्रज्ञा के संगान से किया गया। कार्यक्रम में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय के उद्देश्यों, गतिविधियों एवं योजनाओं के बारे में बताया तथा अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में समर कैम्प के सम्भागी सुजाता, आलिया, प्रिया, स्नेहा, हेमलता, पुखराज, जूही व सांची टंडन ने अपने अनुभवों के बारे में बताया तथा समर कार्यक्रम को जीवन के लिये उपयोगी एवं आगे बढने में सहायक बताया। शिविर में विभिन्न उपयोगी शॉर्ट कोर्सेज कुकिंग प्रशिक्षण, डांस, इन्टीरियर डिजाइन, स्पोंटस प्रशिक्षण, क्राफ्टिग एण्ड पेटिंग, बेसिक कम्प्यूटर, हेयर एण्ड स्कीन केयर, स्पोकन इंग्लिश, योगा व मार्शल आर्ट आदि का प्रशिक्षण दिया गया। इन पाठ्यक्रमों में अबरार अहमद, कुलदीप तंवर, रामनारायण गैणा, नुपूर जैन, डा. अशोक भास्कर, कमलेश जगवानी, उर्वशी, कविता, रॉकी, भूपेन्द्रसिंह आदि ने प्रशिक्षण प्रदान किया। व्यवस्थाओं में पंजीयन आदि के लिये प्रभा जांगिड़ व सारिका ने सहयोग प्रदान किया। समापन कार्यक्रम में शिविरार्थियों को प्रमाण पत्रों का वितरण अतिथियों द्वारा किया गया। प्रोग्राम में लाडनूं एवं आस-पास क्षेत्र के 350 से अधिक युवाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन समन्वयक डा. जुगल किशोर दाधीच ने किया।

विश्व योग दिवस

कार्यक्रम आयोजित

शरीर व मन को स्वस्थ रखने के साधन हैं योग व प्राणायाम- मुनि स्वस्तिक कुमार

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 21 जून को जैन विश्व भारती स्थित आचार्य तुलसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षा ध्यान केन्द्र में योग अभ्यास का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय एवं जैन विश्व भारती के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस उपखंड स्तरीय कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुये मुनिश्री स्वस्तिक कुमार ने कहा, विश्व में सभी प्राणी सुख की चाह रखते हैं। सुख शरीर व मन दोनों का होता है। जहां स्वास्थ्य होता है, वहां सुख होता है और शरीर को स्वस्थ्य-सुखी बनाने के लिये योग और मन को स्वस्थ व सुखी रखने के लिये प्राणायाम व ध्यान के उपक्रम हैं।

स्वांगीण स्वास्थ्य के लिये योग आवश्यक

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अपने सम्बोधन में कहा, स्वस्थ शरीर में स्वस्थ चित व स्वस्थ बुद्धि का निवास होता है। योग से सर्वांगीण स्वास्थ्य प्राप्त किया जा सकता है। आधुनिक युग में योग से व्यक्ति तनावमुक्त जीवन जी सकता है, इसलिये सभी को योग अपनाना चाहिये। पंचायत समिति के विकास अधिकारी कैलाश अरड़ावतिया ने योग को जीवन का आवश्यक अंग बनाने की आवश्यकता बताते हुये उपखंड प्रशासन की ओर से सभी का आभार ज्ञापित किया तथा जैन विश्व भारती के निदेशक राजेन्द्र खटेड़ ने आयोजक संस्था की ओर से धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में प्रार्थना, कायोत्सर्ग,विभिन्न योगासन, यौगिक क्रियायें, विभिन्न प्राणायाम, मुद्रायें, ध्यान, शांतिपाठ आदि का अभ्यास डा. युवराज सिंह खांगारोत ने करवाया। कार्यक्रम में एनसीसी की 3 राज. गर्ल्स बटालियन की तीन युनिटों की छात्राओं, विमल विद्या विहार स्कूल, सोना देवी सेठिया गर्ल्स कॉलेज व जैविभा विश्वविद्यालय की यूनिट्स ने एएनओ निकिता, दिव्या जांगिड़ व भूपेन्द्र सिंह के नेतृत्व में भाग लिया तथा राजकीय अधिकारी, समाजसेवक व गणमान्य नागरिकों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम में नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी भगवान सिंह राठौड़, जलदाय विभाग के सहायक अभियंता नोरतन मल रैगर, आयुष विभाग के डा. जेपी मिश्रा, थानाधिकारी भजन लाल, भाजपा अध्यक्ष हनुमान मल जांगिड़, भारत विकास परिषद के संरक्षक रमेश सिंह राठौड़, विश्वविद्यालय के कुलसचिव वीके कक्कड, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, डा. प्रद्यम्न सिंह शेखावत, डा. जुगल दाधीच आदि उपस्थित थे।

नई तकनीक

प्रदेश का पहला आधुनिकतम विश्वविद्यालय बना

स्मार्ट क्लासेज सुविधा सम्पन्न

संस्थान प्रदेश का पहला ऐसा विश्वविद्यालय बन गया है, जिसमें स्मार्ट क्लासेज में विद्यार्थियों को अध्ययन करवाया जाता है। विश्वविद्यालय में फिलहाल 10 कक्षाओं में स्मार्ट स्टडीज का प्रयोग किया गया है, लेकिन शीघ्र ही पूरे विश्वविद्यालय में कोई कक्षा ऐसी नहीं रहेगी, जिसमें इस आधुनिक तकनीक से पढाई न करवाई जा रही हो। विश्वविद्यालय के अहिंसा एवं शांति विभाग, प्राकृत भाषा विभाग, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग, जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग, शिक्षा विभाग एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की कक्षाओं में स्मार्ट क्लासेज की सुविधायें शुरू की जा चुकी है। इन विभागों की कई कक्षाओं में स्मार्ट स्क्रीन बोर्ड, प्रोजेक्टर, कम्प्यूटर, ऑडियो सिस्टम, माईक, डिजीटल पेन, डिजीटल टीचिंग डिवाइस, रिमोट सिस्टम आदि स्थापित किये जा चुके हैं तथा इनके माध्यम से शिक्षा दी जानी शुरू की जा चुकी है। इन विभागों के टीचिंग स्टाफ को विशेषज्ञों द्वारा आवश्यक प्रशिक्षण भी प्रदान किया जा चुका है। विश्वविद्यालय में आयोजित इस एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में 41 अध्यापन कार्मिकों ने भाग लिया। हालांकि इस स्मार्ट क्लासेज की तकनीक में किसी विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है तथा तकनीक का मामूली जानकार भी इन डिवाईसेज के माध्यम से टीचिंग करवाने में कोई परेशानी का अनुभव नहीं करेगा। विश्वविद्यालय के 850 विद्यार्थी इस आधुनिक तकनीक से लाभान्वित हो पायेंगे।

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने बताया, वे विश्वविद्यालय को देश भर में अद्वितीय बनाने की दिशा में निरन्तर अग्रसर है। स्मार्ट क्लासेज के प्रयोग से कोई भी विद्यार्थी अपने लेक्चर से वंचित नहीं रह पायेगा। अगर वह कभी अनुपस्थित भी रहा तो अगले दिन वह पिछला लेक्चर वापस सुन पायेगा। इस डिवाईस में सारी अध्ययन सामग्री सुरक्षित रहेगी। इससे विद्यार्थियों में पढाई के प्रति रूचि बनी रहेगी तथा वे तेजी से इसका लाभ उठा पायेंगे।

गणतंत्र दिवस समारोह आयोजित

अधिकारों के साथ कर्तव्यों का भी रखें ध्यान- प्रो. दूगड़

संस्थान में 68वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर समारोह पूर्वक ध्वजारोहण किया गया। समारोह के अध्यक्ष कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने झंडारोहण करने के बाद समारोह में गणतंत्र दिवस की बधाई देते हुये कहा- संविधान ने हमें जहां विभिन्न अधिकार दिये हैं, वहीं उनके साथ कर्तव्यों का भी निर्धारण किया है। हमें केवल अपने अधिकारों के प्रति ही नहीं बल्कि कर्तव्यों के प्रति भी जागरूक रह कर उनका पालन करना चाहिये। उन्होंने सामाजिक बदलाव की आवश्यकता बताते हुये कहा कि इसके लिये देश के युवाओं के जागरूक होने की अपेक्षा है। युवाओं के बूते पर ही देश को बदला जा सकता है। समारोह में छात्रा रिया जैन, मीनू रोडा ने एकल गीत प्रस्तुत किये। प्रियंका बिड़ियासर एवं समूह ने धरती सुनहरी, अम्बर नीला एवं पूर्णिमा चौधरी एवं समूह ने झंडा मेरी शान गीतों की प्रस्तुतियां दी। सामूहिक वंदे मातरम् राष्ट्रगीत के पश्चात रजिस्ट्रार वी.के. कक्कड़ ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी, प्रो. अनिल धर, सहायक कुल सचिव विजय कुमार शर्मा, शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन, वितधिकारी राकेश कुमार जैन, जेपी सिंह, डा. जसबीर सिंह, मनीष भटनागर, डा. योगेश कुमार जैन, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, डा. पुष्पा मिश्रा, डा. अमिता जैन, शरद जैन सुधांशु आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन विवेक माहेश्वरी ने किया।

''महिला शिक्षा व स्वावलम्बन'' पर आधारित भव्य कार्यक्रम उत्कर्ष-2017

शिक्षा प्रेरणा के साथ सिखाये आत्मविकास के गुर, अनेक प्रतियोगितायें आयोजित

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के तत्वावधान में यंग्स क्लब सुजानगढ के सभागार में 4 मार्च को महिला शिक्षा व स्वावलम्बन को समर्पित कार्यक्रम उत्कर्ष-2017 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक योगेन्द्र फौजदार ने अपने सम्बोधन में कहा- भविष्य महिला शक्ति का है और महिलायें आज हर क्षेत्र में पूर्ण आत्मविश्वास के साथ निरन्तर आगे बढ कर अपनी सफलताओं के परचम फहरा रही है। उन्होंने नारी शिक्षा के क्षेत्र में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के योगदान को महत्वपूर्ण बताया तथा कहा, यह एक श्रेष्ठ शिक्षण संस्थान है। कार्यक्रम में कोलकाता सिटीजन्स इन्टीयेटिव के चैयरमेन अशोक पुरोहित ने प्रबंधन एवं आत्म विकास पर बोलते हुये कहा, जीवन के हर क्षेत्र में प्रबंधन का महत्व होता है। समय प्रबंधन को अपनाने से जीवन की अधिकांश समस्यायें नहीं रह पाती है। इसी प्रकार वितीय प्रबंधन भी समस्याओं को पैदा होने से रोकता है। विशिष्ट अतिथि तहसीलदार सुशील कुमार सैनी ने इस अवसर पर कहा कि महिला शिक्षा वर्तमान समय में सबसे जरूरी बन कर उभरा है। नारी शिक्षित होकर एक साथ दो घरों में उजाला करती है, इसलिये हर परिवार में महिलायें शिक्षित होनी आवश्यक है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने विश्वविद्यालय की व्यवस्थाओं, सुविधाओं व संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। विशिष्ट अतिथि देवेन्द्र कुंडलिया व पंचायत समिति सदस्य सुशीला चौधरी ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुये जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय की सराहना की। प्रारम्भ में कार्यक्रम समन्वयक डा. जुगल किशोर दाधीच ने सबका स्वागत किया। अंत में प्रो. अनिल धर ने आभार ज्ञापित किया।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियां व योग का प्रदर्शन - उत्कर्ष-2017 कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के योग व जीवन विज्ञान विभाग के छात्र-छात्राओं ने विभिन्न योगासनों व यौगिक क्रियाओं का प्रदर्शन किया। सहायक आचार्य डा. अशोक भास्कर के निर्देशन में म्युजिक पर योग के प्रदर्शन करके सबको आकर्षित किया। कार्यक्रम में अन्तर्विद्यालयी सांस्कृतिक प्रतियोगितायें आयोजित की गई, जिनमें एकल गायन में बाल भारती विद्यापीठ की छात्रा अदिति अग्रवाल प्रथम रही। द्वितीय स्थान पर सूरजकुमारी गाड़ोदिया आदर्श विद्या मंदिर की अन्नपूर्णा सुथार रही। एकल नृत्य में गांधी बालिका विद्यालय की छात्रा चांदनी सोनी प्रथम व कनोई बालिका विद्यालय की निशा कंवर द्वितीय रही। सामुहिक नृत्य प्रतियोगिता में ट्विंकल एंड ज्योति पार्टी ने प्रथम स्थान तथा आदर्श विद्या मंदिर बालिका विद्यालय की निशा मिश्रा एंड पार्टी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। सभी विजेता व उपविजेता रहे प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किये गये। कार्यक्रम में शम्सुदीन स्नेही, ओमप्रकाश तूनवाल, गिरधर शर्मा, ज्ञान प्रकाश, शोभा सेठिया, मुकेश रावतानी, विजयपाल श्योराण, सरोज पूनिया, धन्नीदेवी लोढा, अरूणा कुंडलिया, कमला सिंघी, भूपेन्द्र छाजेड़, कमलनयन तोषनीवाल, दर्शन भरतवाल, महेश तंवर, विमल भूतोड़िया आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डा. घनश्याम नाथ कच्छावा ने किया।

राज्य स्तरीय खिलाड़ी तैयार करने के लिये द्विमाही प्रशिक्षण

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में विभिन्न खेलों की टीमें तैयार करने एवं उन्हें राज्य स्तरीय तथा अन्तर्विश्वविद्यालय प्रतिस्पर्धाओं में भेजे जाने के लिये तैयार करने के लिये खिलाड़ी विद्यार्थियों के विशेष प्रशिक्षण का कार्यक्रम 1 फरवरी से 30 मार्च तक आयोजित किया गया। विश्वविद्यालय के क्रीड़ा अनुभाग के कोच भूपेन्द्र सिंह राठौड़ ने बताया, कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशानुसार बास्केट बॉल, बेडमिंटन, कबड्डी, खो-खो, व एथलेटिक्स खेलों के लिये 15-15 दिनों का विशेष प्रशिक्षण प्रदान करके उन्हें प्रतिस्पर्धाओं में भेजे जाने के लिये तैयार किया गया। प्रशिक्षण दो पारियों में दिया गया, जिसमें प्रात:कालीन पारी में छात्राओं को एवं सायंकालीन पारी में छात्रों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम में 1 फरवरी से 15 फरवरी तक बास्केट बॉल, 15 फरवरी से 28 फरवरी तक बेड मिंटन, 1 मार्च से 15 मार्च तक कबड्डी व खो-खो का प्रशिक्षण तथा एथलेटिक्स के लिये 15 मार्च से 30 मार्च तक प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

प्राच्य विद्याओं व आधुनिक शिक्षा के समन्वय का स्वरूप है संस्थान- प्रो. सामौर

संस्थान के पूर्व छात्रों के सम्मेलन एल्यूमिनी मीट-2017 का आयोजन 8 अप्रेल को सेमिनार हॉल में किया गया। लोहिया कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल प्रो. भंवर सिंह सामौर ने जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय को अद्वितीय संस्थान बताया तथा कहा कि आचार्य तुलसी की कल्पना की सफलतम प्रस्तुति यह विश्वविद्यालय आज विश्वविख्यात है। उन्होंने कहा- महामना मदनमोहन मालवीय के बाद आचार्य तुलसी ने शिक्षा के क्षेत्र में विशेष कार्य किया और लाडनूं का नाम ऊंचा किया है। मालवीय ने काशी को केन्द्र बनाया और आचार्य तुलसी ने अपनी जन्मभूमि लाडनूं को प्राच्य विद्याओं व आधुनिक शिक्षा के समन्वय का स्वरूप प्रदान किया है। उन्होंने अहिंसा को जीवन में उतारने की आवश्यकता बताते हुये कहा कि यह पहला विश्वविद्यालय है, जहां अहिंसा का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

अपने आप में विश्वविद्यालय थे आचार्य तुलसी

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने इस विश्वविद्यालय के संस्थापक आचार्य तुलसी को अपने आप में एक विश्वविद्यालय बताया। विशिष्ट अतिथि प्रो. अनिल धर ने अपने जीवन के उद्धरण देते हुये विद्यार्थीकाल से लेकर जीवन भर विश्वविद्यालय को एक माता की तरह से पोषण करने वाला संस्थान बताया। पूर्व छात्र राज गुनेचा, कमलेश यादव, जय प्रकाश, सिया राम, डा. अदिति गौतम आदि ने अपने अनुभवों के बारे में बताया। कार्यक्रम में एल्यूमिनी एसोसियेशन की सचिव डा. पुष्पा मिश्रा ने सम्मेलन के उद्देश्य, महत्व आदि का विवरण प्रस्तुत किया। एल्यूमिनी एसोसियेशन के अध्यक्ष डा. आलम अली ने प्रारम्भ में सबका स्वागत किया। कार्यक्रम में एसोसियेशन की ओर से विश्वविद्यालय के प्रारम्भ के कुछ सालों के बैच से रहे पूर्व छात्रों प्रो. अनिल धर, डा. आलम अली, राज गुनेचा, बूटी राम, डा. आभा सिंह, डा. अदिति गौतम, तिलक राज, कमलेश यादव, तृप्ति त्रिपाठी आदि का सम्मान किया। कार्यक्रम के समापन पर डा. आभा सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

योग विभाग का सेमिनार आयोजित

संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के अन्तर्गत आयोजित योग सेमिनार में विभाग के विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रकार की शारीरिक, मानसिक एवं भावात्मक बीमारियों, नशा, मन, चक्र, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, कुंडलिनी, पंचकोश, आसन, प्राणायाम, प्रेक्षाध्यान, व्यक्तित्व विकास आदि विषयों पर अपने-अपने विचार व्यक्त किये। सेमिनार में विभाग के द्वितीय व चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने भाग लिया। विभागाध्यक्ष डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने विभागीय सेमिनार के महत्व व बारीकियों पर प्रकाश डाला। सेमिनार में सहायक आचार्य डा. अशोक भास्कर, डा. हेमलता जोशी, डा. विवेक महेश्वरी आदि उपस्थित थे।

जन स्वास्थ्य के लिये विश्वविद्यालय ने शुरू की नि:शुल्क योग कक्षायें

संस्थान द्वारा सामाजिक सरोकार कार्यक्रम के तहत शहरवासियों को निरोग एवं स्वस्थ बनाने के लिये विश्वविद्यालय के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के अन्तर्गत नि:शुल्क योग कक्षाओं की सेवा शुरू की गई है। इसमें सुयोग्य व दक्ष योग विशेषज्ञों द्वारा आसन, प्राणायाम, ध्यान, यौगिक क्रियायें आदि करवाई जाती है। जैन विश्व भारती स्थित महाप्रज्ञ इंटरनेशनल हॉल में प्रतिदिन सवेरे 6.30 बजे से 7.30 बजे तक इनमें एक घंटा नियमित योगाभ्यास करवाया जाता है। इन कक्षाओं में किसी भी आयुवर्ग का कोई भी महिला पुरूष भाग ले सकता है। यहां नियमित योगाभ्यास करके स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं। ज्ञात रहे कि विभाग के सहायक आचार्य डॉ अशोक भास्कर ये कक्षाएं संचालित कर रहे है।

नववर्ष समारोह का आयोजन

चुनौतियों का सामना करने से मिलता है सफलता का आनंद-कुलपति

संस्थान के महाप्रज्ञ सभागार में नववर्ष पर 2 जनवरी को आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा, उल्लास चुनौतियों से होकर गुजरता है। जीवन में जितनी चुनौतियां ज्यादा होती है, उतनी ही आनंद की अनुभूति अधिक होती है। हम चुनौतियों को झेलते हैं, उसका सामना करते हैं तब सफलता मिलती है और प्रसन्नता का अनुभव होता है। उन्होंने कहा अगर किसी अन्य से उसकी तुलना होती है तो उसकी सफलता अधूरी है। अपना मार्ग खुद ही बनाये तो व्यक्ति सफल होता है, दूसरे के मार्ग पर चलकर सफलता तक पहुंचने में मिली खुशियां वो आनंद नहीं दे पाती जो खुद के मार्ग से मिलता है। उन्होंने कहा कि कभी भी चुनौतियों से परेशान नहीं होना चाहिए। चुनौतियों का मुकाबला करने से ही व्यक्ति में निखार आता है। समारोह में समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञा ने कहा कि हर व्यक्ति खुश रहना चाहता है लेकिन प्रतिकूलताओं में व्यक्ति अपने आप को दुखी महसूस करता है, पर जो अपनी सोच को पोजीटिव रखते है वे कभी दुखी नहीं हो सकते। उन्होंने खुशी के लिए तीन चीजें आवश्यक बताई जिनमें एक्सेप्ट यानि परिस्थिति को स्वीकार करना, एडजस्ट यानि परिस्थिति के साथ समायोजन करना और एप्रीशियेसन क्वालिटी का विकास करना आवश्यक है। उन्होंने कहा, नये साल में संकल्प करें कि इन तीनों सूत्रों को अपनाकर अपने सपनों को सफलता का रूप देंगे।

विभिन्न मनोरंजन प्रतियोगिताओं का आयोजन- नववर्ष समारोह में बच्चों के लिये बैलून दौड़ एवं चम्मच दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बैलून दौड़ में आलोक शास्त्री, अंकिता जैन व संयम जैन विजेता रहे तथा चम्मच दौड़ में नैना शेखावत प्रथम स्थान पर रही। बैलून फुलाने व फोड़ने की युगल प्रतियोगिता में प्रद्युम्नसिंह शेखावत दंपति विजेता रहे। शहरों के नाम अंकित करने की प्रतियोगिता में विजेता के रूप में विनोद कुमार कक्कड़ व मनीष भट्नागर रहे। फैमिली ग्रुप की याददाश्त परखने के लिए क्रमवार चित्रों के नामांकन प्रतियोगिता में मनीष भट्नागर एवं उनका परिवार प्रथम रहा। म्यूजिकल चेयर प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर नेपाल चंद गंग व प्रो. बी.एल. जैन एवं महिलाओं में विजेता सोनिका जैन रही। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में दीपक माथुर विजेता रहे। महिलाओं के लिए रसोईघर में काम आने वाली सफेद वस्तुओं के नाम लिखने की प्रतियोगिता में नौ सहभागी सम्मिलित हुई, जिनमें से वर्षा शर्मा ने सर्वाधिक नाम लिखकर पुरस्कार प्राप्त किया।

गीत, नृत्य आदि कार्यक्रमों का आयोजन- कार्यक्रम का शुभारंभ छात्रा सुमन द्वारा गणपति वंदना से प्रारंभ किया गया। सुरजपाल ने स्वागत गीत व आनन्द पाल सिंह ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया। सुमन सिमर ने लोक नृत्य पेश किया। डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, डॉ. गिरिराज भोजक ने गीत प्रस्तुत किये। डॉ. युवराज सिंह खंगारोत, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, नुपूर जैन, पूजा जैन आदि ने भी विभिन्न मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विवेक माहेश्वरी, डॉ. योगेश जैन व डॉ आभा सिंह ने किया।

संस्थान की गतिविधियाँ : समाचार पत्रों के दर्पण में

जैविभा विश्वविद्यालय में डिजिटल स्टूडियो दो देन में शुरू होगा, व्याख्यान विदेशों तक जाएंगे

'चुनौतियां ही बढ़ाती सफलता का आनंद'

आनलाइन होगी जैन विश्वभारती की लाइब्रेरी

लाइब्रेरी में 6655 पांडुलिपियां व 120 जर्नल उपलब्ध

दुर्लभ पांडुलिपियों का भंडार

डॉ. जैन ने 80 की उम्र में की एमएससी, दूसरों

जैन विद्या, प्राकृत व संस्कृत भाषा विषयों में एमए करने पर विश्वविद्यालय देगी छात्रवृत्ति

बड़े सपने देखें और लीडर बनें

एल्युमिनी मीट में बोले वक्ता- जैन विश्व भारती और लाडनूं के बारे में दुनिया को बताएं पूर्व छात्र

पूर्व छात्रों का हुआ सम्मेलन, आचार्य तुलसी के शिक्षा में सहयोग को किया याद

अनेकांत में है समस्त समस्याओं का हलः शास्त्र

देखते हैं जीवन की सच्चाई, करते हैं सेवा कार्य और मिलता है प्लेसमेंट

आने वाला समय नारी शक्ति क

आयोजन

लाडनूं की आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में हुई परीक्षा, छात्राओं को आगे बढ़ने के लिए किया प्रेरित, पुरस्

टैलेंट सर्च कंपीटिशन में 12वीं की 44 छात्राओं ने लिया

आचार्य महाश्रमण के जन्मोत्सव पर नशामुक्ति का संकल्प लिया

लाडनूं के जैन विश्व भारती विवि में आयोजन

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में बदलाव की तैयारी

देश भर में व्यापक प्रचार की योजना

समाज को धर्म की शिक्षा देने वाले साधु-साध्वियां रहे हैं पढ़ाई, 125 संतों ने ली एमए व पीएचडी की

जैविभा प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय, जहां स्मार्ट क्लासेज

पहले चरण में 10 कक्षाओं में स्मार्ट क्लासेज, दूसरे चरण में पूरे विश्वविद्यालय में शुरू

850 विद्यार्थियों को मिलेगा फायदा

मूल्य शिक्षा परियोजना कार्यक्रम के तहत कार्यशाला आयोजित

नैतिक मूल्यों में आई गिरावट की गाज बच्चों-युवाओं पर नहीं थोपें-कक्कड़

जैन विश्व भारती संस्थान के मूल्य शिक्षा परियोजना कार्यक्रम के तहत स्थानीय कस्तूरबा गांधी अल्पसंख्यक बालिका आवासीय विद्यालय में एक कार्यशाला का आयोजन 17 मार्च को किया गया। कार्यशाला के अध्यक्ष रजिस्ट्रार वीके कक्कड़ ने अपने सम्बोधन में कहा, कि हमारा समाज आमतौर पर नैतिक मूल्यों में आई गिरावट की गाज बच्चों पर युवाओं पर थोप देता है, लेकिन यह अनुचित है। बच्चे तो भगवान का रूप कहे जाते हैं। वे हमें देखकर ही अपने विचार व संस्कार बनाते हैं, उनमें अगर विकृतियां आती हैं तो उसके जिम्मेदार हम ही हैं। उन्होंने अध्यापक, अभिभावक व विद्यार्थी तीनों को परस्पर पूरक बताते हुये कहा कि बच्चा छह घंटे विद्यालय में रहता है और 18 घंटे घर में, उसके जीवन को बेहतर बनाने के लिये सभी को मिलकर प्रयास करना चाहिये। कक्कड़ ने आचरण के सम्बंध में तीन बातें आवश्यक बताई तथा कहा कि मुख से बोले जाने वाले शब्द, उसके चेहरे के हाव-भाव एवं उसकी बॉडी-लेंग्वेज से ही व्यक्ति के बारे में आकलन किया जाता है, इसलिये इनमें सुधार प्रथम तौर पर होना चाहिये। उन्होंने अपने व्यवहार से किसी को दुःख नहीं पहुंचाने, किसी गलती का दोहराव नहीं करने, समयबद्धता से कार्य करने, सम्मान करने, जिज्ञासा रखने आदि को नैतिकता के लिये आवश्यक बताया।

नैतिक मूल्य बनें जीवन की शैली

विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने मूल्य शिक्षा कार्यशाला में बचपन से ही नैतिक मूल्यों के विकास की आवश्यकता बताया तथा कहा कि अच्छी बातों को जीवन में उतारने और जीवन को अच्छाईयों के अनुसार ढालना ही मूल्य आधारित जीवन शैली है और हमें इसके लिये पूरा प्रयास करना चाहिये। परियोजना के सह प्रभारी डा. विष्णु कुमार ने कहा- बच्चे विचारधारा के अनुसार ही अपना जीवन निर्माण करते हैं, इसलिये उनके विचारों को बेहतर बनाये जाने के लिये प्रयास होने चाहिये। उन्होंने कहा कि हमारे विचारों का प्रभाव शरीर से विकिरण होता है, इसलिये उनकी तरफ ध्यान देना आवश्यक है। प्रधानाध्यापिका शबाना खान ने छात्राओं में नैतिक शिक्षा की जिम्मेदारी शिक्षकों द्वारा लेने की जरूरत बताई। विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति के अध्यक्ष जब्बार ने मूल्य शिक्षा को वक्त की जरूरत बताया तथा कहा, गिरते हुये मूल्यों की रोकथाम के लिये जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय द्वारा चलाया जा रहा अभियान बहुत की अच्छा प्रयास है। परियोजना के प्रभारी डा. भाबाग्रही प्रधान ने आभार ज्ञापित करते हुये छोटे-छोटे मूल्यों को अपना कर जीवन को संवारने की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम का संचालन परवीना भाटी ने किया। कार्यक्रम में कमला चौधरी, नजीर खां मोयल, अयूब, रोशनी बानो, शहनाज बानो, मो. बिलाल मुगल आदि उपस्थित थे।

संवाहिनी के सम्पादक गंग नहीं रहे

जैन विश्व भारती संस्थान के उप कुलसचिव एवं संवाहिनी पत्रिका के सम्पादक नेपालचंद गंग का 22 फरवरी को सुबह 4 बजे जयपुर में इलाज के दौरान निधन हो गया। उन्हें गत 12 फरवरी को जयपुर जाते समय अचानक हृदयाघात हुआ, उन्हें जयपुर में आईसीयु में रखा गया, लेकिन तब से वे लगातार कोमा में रहे। चिकित्सकों ने उनके ब्रेन का निष्क्रिय हो जाना बताया। वे अपनी दीर्घकालीन सेवाओं के बाद 28 फरवरी को विश्वविद्यालय से सेवानिवृत होने वाले थे।

फार्म 4
(नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	:	जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान
2.	प्रकाशन अवधि	:	अर्द्धवार्षिक
3.	मुद्रक का नाम	:	विनोद कुमार कक्कड़
	क्या भारत के नागरिक है ?	:	हाँ
	पता	:	जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान
4.	प्रकाशक का नाम	:	विनोद कुमार कक्कड़
	क्या भारत के नागरिक है	:	हाँ
	पता	:	(कॉलम 3 के अनुसार)
5.	सम्पादक का नाम	:	समणी अमल प्रज्ञा
	क्या भारत के नागरिक है	:	हाँ
	पता	:	(कॉलम 3 के अनुसार)
6.	उन व्यक्तियों के नाम पते जो पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	:	जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान

मैं विनोद कुमार कक्कड़ एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

विनोद कुमार कक्कड़
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

'A' Grade my NAAC & 'A' Category by MHRD

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 1956 की धारा 3 के अन्तर्गत घोषित

मान्य विश्वविद्यालय

M.A.
M.S.W.
M.Phil.
Ph.D.

B.A./B.Com.
B.Sc.
B.A.-B.Ed
B.Sc.-B.Ed
B.Ed.-M.Ed.

Placement Assistance | Separate Hostels for Male & Female | Scholarship Facility | Internet Facility | Coaching for Competition Exams

विशेषताएँ

● राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा समाजोपयोगी कार्यक्रम ● व्यक्तित्व विकास शिविर द्वारा मूल्यपरक शिक्षण एवं प्रशिक्षण ● शैक्षिक भ्रमण ● राज्य एवं राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिताओं में संभागिता ● महाविद्यालय परिसर में बुक बैंक व्यवस्था उपलब्ध ● अंग्रेजी संभाषण एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण जैसे पाठ्यक्रमों में रियायती शुल्क पर प्रशिक्षण ● योग्य अनुभवी शिक्षक एवं प्रबुद्ध समणी वर्ग द्वारा विशेष अध्यापन ● आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित अंग्रेजी संभाषण एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण हेतु प्रयोगशाला लेबोरेटरी ● शान्त, सुरक्षित, अनुशासित एवं प्रदूषण मुक्त परिवेश ● सभी पाठ्यक्रम यू.जी.सी. एवं भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त ● संभाषण, लेखन, खेलकूद, साहसिक एवं रोमांचक खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से व्यक्तित्व निर्माण की दिशा में विशेष अवसर ● समृद्ध एवं विशाल पुस्तकालय की व्यवस्था ● छात्रावास एवं जिम की सुविधा ● प्राच्य विद्याओं का अध्ययन करने वाले छात्रों को स्कॉलरशिप देने का प्रावधान ● प्रतियोगी परीक्षाओं का प्रशिक्षण (NET, JRF, CA and CS) ● विषयों से सम्बन्धित विशेष कोचिंग कक्षाएं।

नियमित पाठ्यक्रम

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

एम.ए.

▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ दर्शन ▸ संस्कृत ▸ प्राकृत ▸ हिन्दी ▸ योग एवं जीवन विज्ञान ▸ क्लीनिकल साइकोलॉजी ▸ अहिंसा एवं शान्ति ▸ राजनीतिक विज्ञान ▸ समाज कार्य ▸ अंग्रेजी ▸ एम.एड.(उपरोक्त सभी विषयों में पीएच.डी. सुविधा)

एम.फिल.

▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ अहिंसा एवं शांति ▸ प्राकृत एवं जैन आगम

स्नातक पाठ्यक्रम

▸ बी.ए. ▸ बी.कॉम. ▸ बी.एस.सी. ▸ बी.ए.-बी.एड. ▸ बी.एससी-बी.एड. ▸ बी.एड. (केवल महिलाओं के लिए)

डिप्लोमा पाठ्यक्रम

▸ स्टडीज इन जैनिज्म ▸ नेचुरोपैथी ▸ प्रेक्षा योग थैरेपी ▸ एन.जी.ओ. मैनेजमेण्ट ▸ बैंकिंग ▸ रूरल डेवलपमेण्ट ▸ जेण्डर इम्पॉवरमेण्ट ▸ कॉरपोरेट सोशल रिस्पोन्सिबिलिटी ▸ ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेण्ट ▸ काउन्सलिंग एण्ड कम्यूनिकेशन ▸ राजभाषा अध्ययन

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

▸ प्राकृत ▸ संस्कृत ▸ योग एवं प्रेक्षाध्यान ▸ जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग शिक्षा ▸ अहिंसा एवं शांति ▸ जर्नलिज्म एण्ड मास मीडिया ▸ ऑफिस ऑटोमेशन एण्ड इंटरनेट ▸ फोटोशॉप ▸ एचटीएमएल-वेब डिजाईनिंग

पत्राचार पाठ्यक्रम

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

▸ जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन ▸ शिक्षा ▸ हिन्दी ▸ योग एवं जीवन विज्ञान ▸ अंग्रेजी

स्नातक पाठ्यक्रम

▸ बी.ए. ▸ बी.कॉम.

प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

▸ अहिंसा प्रशिक्षण ▸ अण्डरस्टेडिंग रिलिजन ▸ जैन धर्म एवं दर्शन ▸ प्राकृत ▸ जैन आर्ट एंड एस्थेटिक्स ▸ ह्यूमन राइट्स ▸ प्रेक्षा लाईफ स्कील

बी.पी.पी. पाठ्यक्रम

वे आवेदक जो 10+2 उत्तीर्ण नहीं हैं अथवा प्राथमिक औपचारिक योग्यता नहीं रखते हैं, लेकिन 18 वर्ष की उम्र पूर्ण कर चुके हों, विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित बी.पी.पी. परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् बी.ए. प्रथम वर्ष में प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं।

फोन : 01581-226110, 224332, 226230 फैक्स : 227472 web : www.jvbi.ac.in e-mail : jvbiladnun@gmail.com